CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2016 with Solution PDF-Set 2/2/2

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)

निर्धारित समय: 3 Hours **अधिकतम अंक: 103**

सामान्य निर्देश

(i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 14 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) प्रश्न 8, 10, 11 में आंतरिक विकल्प दिया गया है; ऐसे प्रश्नों में केवल एक विकल्प का उत्तर दीजिए।
(iii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
(iv) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1. तूफ़ानों की ओर घुमा दो नाविक निज पतवार।
आज सिंधु ने विष उगला है
लहरों का यौवन मचला है
आज हृदय में और सिंधु में
साथ उठा है ज्वार।
यह असीम निज सीमा जाने
सागर भी तो यह पहचाने
मिट्टी के पुतले मानव ने
कभी न मानी हार।
लहरों के स्वर में कुछ बोलो
इस अंधड़ में साहस तोलो
कभी-कभी मिलता जीवन में
तूफ़ानों का प्यार।
सागर की अपनी क्षमता है
पर नाविक भी कब थकता है
जब तक साँसों में स्पंदन है
उसका हाथ नहीं रुकता है
इसके ही बल पर कर डाले सातों सागर पार
तूफ़ानों की ओर घुमा दो नाविक निज पतवार। [5 अंक]

1(क). कवि नाविक से क्या अनुरोध कर रहा है और क्यों? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में नाविक से किया गया प्रत्यक्ष अनुरोध और उसके पीछे की प्रेरणा पहचाननी है।
- तूफ़ान प्रतिकूल परिस्थितियों का संकेत है; नाविक का साहस उनसे जूझने की शक्ति है।

चरण 1: अनुरोध पहचानना कवि कहता है, 'तूफ़ानों की ओर घुमा दो नाविक निज पतवार।' वह नाविक से नाव को तूफ़ानों की ओर ले जाने और उनका सामना करने का अनुरोध करता है।

चरण 2: कारण समझना मानव ने कभी हार नहीं मानी है। चुनौती का सामना करने पर ही उसके साहस और संघर्ष-शक्ति की परीक्षा होती है; इसलिए कवि संकट से घबराने के स्थान पर उससे जूझने को प्रेरित करता है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि नाविक से पतवार तूफ़ानों की ओर मोड़ने को कहता है, ताकि वह साहसपूर्वक संकटों का सामना करके मानव के अजेय संकल्प का परिचय दे।

त्वरित सुझाव: उत्तर में अनुरोध और उसका कारण दोनों लिखें; केवल पतवार मोड़ने का उल्लेख पर्याप्त नहीं है।

1(ख). कवि के अनुसार समुद्र को क्या पहचान लेना चाहिए? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उत्तर के लिए समुद्र को संबोधित पंक्तियों का आशय ग्रहण करना है।

- मानव की देह सीमित है, किंतु उसका साहस उसे पराजय स्वीकार नहीं करने देता।

चरण 1: संबंधित पंक्तियाँ पहचानना कवि कहता है, 'सागर भी तो यह पहचाने / मिट्टी के पुतले मानव ने / कभी न मानी हार।' यहाँ समुद्र के विस्तार के सामने मानव के अटूट संकल्प को रखा गया है।

चरण 2: आशय स्पष्ट करना समुद्र अपनी विशालता और शक्ति पर गर्व करके मनुष्य को असहाय न समझे। मनुष्य कठिन परिस्थितियों से लगातार संघर्ष करता है और विपत्तियों के सामने हार स्वीकार नहीं करता।

चरण 3: निष्कर्ष समुद्र को पहचान लेना चाहिए कि मिट्टी से बना मनुष्य भी साहसी और दृढ़ संकल्प वाला है; उसने कभी हार नहीं मानी और वह संकटों से जूझ सकता है।

त्वरित सुझाव: समुद्र की पहचान का उत्तर मानव की अजेय संघर्ष-शक्ति से जोड़ें, समुद्र की विशालता का वर्णन न करें।

1(ग). नाविक के स्वभाव और संघर्ष को स्पष्ट कीजिए। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- नाविक का स्वभाव उसके कर्म और प्रतिकूल परिस्थितियों में उसके व्यवहार से स्पष्ट होता है।
- काव्यांश में लगातार पतवार चलाना साहस, परिश्रम और दृढ़ता का प्रमाण है।

चरण 1: स्वभाव की विशेषताएँ नाविक साहसी, कर्मठ, धैर्यवान और संघर्षशील है। वह समुद्र की शक्ति से भयभीत होकर काम छोड़ने वाला नहीं है। 'पर नाविक भी कब थकता है' उसकी अटूट लगन को व्यक्त करता है।

चरण 2: संघर्ष का स्वरूप जब तक उसकी साँस चलती है, उसका हाथ नहीं रुकता। वह तूफ़ानों और ऊँची लहरों के बीच भी पतवार चलाता रहता है। इसी निरंतर प्रयास के बल पर वह सातों सागर पार कर लेता है।

चरण 3: निष्कर्ष नाविक साहसी, अथक और दृढ़निश्चयी है। वह जीवन रहते तूफ़ानों से संघर्ष करते हुए लगातार पतवार चलाता है और अपने परिश्रम से समुद्र पार करता है।

त्वरित सुझाव: स्वभाव की हर विशेषता को नाविक के किसी कर्म से जोड़ें; केवल विशेषणों की सूची न दें।

1(घ). आशय स्पष्ट कीजिए – 'कभी-कभी मिलता जीवन में तूफ़ानों का प्यार' [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पंक्ति में तूफ़ानों का प्यार कठिनाइयों से मिलने वाले उपयोगी अनुभव का संकेत है।
- भावार्थ लिखते समय शब्दों के पीछे निहित जीवन-संदेश स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 1: प्रतीक का अर्थ तूफ़ान जीवन के संकटों और कठिन परिस्थितियों का प्रतीक है। उसका प्यार मिलने का अर्थ संकटों का सुखद होना नहीं, बल्कि उनसे जूझकर साहस और क्षमता को पहचानने का अवसर मिलना है।

चरण 2: जीवन से संबंध ऐसे अवसर जीवन में कभी-कभी आते हैं। कठिनाइयों का सामना करते हुए मनुष्य का धैर्य, आत्मविश्वास और संघर्ष-बल विकसित होता है। इसलिए कवि चुनौतियों को उत्साह से स्वीकार करने की प्रेरणा देता है।

चरण 3: निष्कर्ष आशय है कि जीवन में कभी-कभी संकट मनुष्य को अपना साहस परखने और संघर्ष से आगे बढ़ने का अवसर देते हैं; इसलिए उनसे घबराने के स्थान पर उनका सामना करना चाहिए।

त्वरित सुझाव: तूफ़ानों को जीवन की कठिनाइयों से जोड़कर उनका सकारात्मक प्रभाव बताएँ; केवल पंक्ति दोहराएँ नहीं।

1(ङ). काव्यांश का केंद्रीय भाव क्या है? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- केंद्रीय भाव में संपूर्ण काव्यांश का प्रमुख जीवन-संदेश संक्षेप में प्रस्तुत किया जाता है।
- तूफ़ान और समुद्र विपत्तियों के, जबकि नाविक साहसी एवं कर्मठ मानव का संकेत हैं।

चरण 1: मुख्य कथ्य पहचानना काव्यांश बार-बार नाविक को तूफ़ानों की ओर बढ़ने को कहता है। समुद्र की शक्ति के सामने भी नाविक का हाथ नहीं रुकता। इससे विपरीत परिस्थितियों में निरंतर कर्म करते रहने का संदेश उभरता है।

चरण 2: समग्र संदेश ग्रहण करना मनुष्य का साहस, दृढ़ संकल्प और अथक परिश्रम उसे बड़ी बाधाएँ पार करने में समर्थ बनाते हैं। कठिनाइयों से पलायन करने के बजाय उनसे जूझना और हार न मानना ही काव्यांश की मूल प्रेरणा है।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश का केंद्रीय भाव है कि मनुष्य साहस, दृढ़ संकल्प और निरंतर परिश्रम के बल पर जीवन के बड़े-से-बड़े संकटों पर विजय प्राप्त कर सकता है; उसे कभी हार नहीं माननी चाहिए।

त्वरित सुझाव: केंद्रीय भाव में पूरे काव्यांश का एक मुख्य संदेश लिखें; अलग-अलग पंक्तियों का भावार्थ न दें।

---

2. मुक्त बाज़ार की अर्थव्यवस्था ने जहाँ एक ओर शिक्षा और रोज़गार के लिए अनेक अवसर प्रदान किए हैं वहीं हिंदी भाषा के लिए भी। बाज़ार में अधिसंख्य उपभोक्ता चूँकि हिंदी भाषी हैं इसलिए उत्पाद-विपणन, व्यापार और विज्ञापन के लिए हिंदी की आवश्यकता है। देश में भी हिंदी का चलन बढ़ा है। निहित राजनीतिज्ञ स्वार्थों को किनारे कर दें तो हिंदी का प्रचार-प्रसार बढ़ रहा है। हिंदीतर भाषा-भाषी राज्यों, विशेषकर दक्षिण के राज्यों के प्रमुख नगरों में हिंदी प्रसार का एक कारक 'मार्केट' से हिंदी का जुड़ाव भी है। हिंदी का कारवाँ भारत में ही नहीं, विदेशों में भी बढ़ रहा है। दुबई, रूस और ब्रिटेन में तो पहले से ही हिंदी अनजान भाषा नहीं थी; आज अमेरिका, यूरोप, दक्षिण-पूर्व एशिया, दक्षिण अफ्रीका आदि में भी हिंदी व्यवहार में आ रही है। जिन देशों में साम्राज्यवादी दिनों में भारतीय मज़दूर ले जाए गए थे वे आज भी भारतीय मूल का होने पर गर्व करते हैं और हिंदी को पूरे उत्साह के साथ अपनाए हुए हैं। उनमें मॉरिशस, फिज़ी, ट्रिनीडाड, सूरिनाम जैसे देश हैं। वहाँ हिंदी बाज़ार की ही भाषा नहीं, साहित्य और पत्रकारिता की भाषा भी है। उनकी पीड़ा ये है कि भारत ने अपने भारतवंशियों को भुला दिया है। ये लोग बँधुआ मज़दूर के रूप में ले जाए गए थे परंतु आज हमारे सांस्कृतिक दूत हैं। यह ऐसे ही है जैसे हज़ारों वर्ष पूर्व हमारे ऋषियों ने या बाद में बौद्धभिक्षुओं ने समुद्रों, पर्वतों को लाँघकर भारतीयता का प्रचार किया था। भारत हिंदी को संयुक्त राष्ट्र की भाषा बनाने के लिए प्रतिबद्ध है तो उसके साथ यह दायित्व भी उसी का है कि विश्वभर में बिखरे हिंदी भाषियों को बौद्धिक और संसाधनों से समर्थन प्रदान करे। [15 अंक]

2(क). उपर्युक्त अनुच्छेद का एक शीर्षक दीजिए। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शीर्षक छोटा, सारगर्भित और पूरे अनुच्छेद के मुख्य विषय का प्रतिनिधि होना चाहिए।
- गद्यांश का केंद्र भारत और विदेशों में हिंदी का बढ़ता प्रयोग तथा उसके प्रसार का दायित्व है।

चरण 1: विषय की पहचान अनुच्छेद में मुक्त बाज़ार, व्यापार और विज्ञापन के कारण हिंदी की आवश्यकता बढ़ने का उल्लेख है। इसके बाद विदेशों में हिंदी के व्यवहार और भारतवंशियों द्वारा उसके संरक्षण की चर्चा की गई है।

चरण 2: शीर्षक का चयन केवल बाज़ार या प्रवासी मज़दूरों पर केंद्रित शीर्षक अनुच्छेद के एक भाग को ही व्यक्त करेगा। हिंदी के विश्वव्यापी प्रसार को केंद्र में रखने वाला शीर्षक देश-विदेश के विस्तार को एक साथ समेटता है।

चरण 3: निष्कर्ष उपयुक्त शीर्षक है: 'हिंदी का बढ़ता वैश्विक प्रसार'।

त्वरित सुझाव: शीर्षक चुनते समय देखें कि वह बाज़ार के साथ विदेशों में हिंदी की स्थिति को भी समेटता हो।

2(ख). मुक्त बाज़ार के किन लाभों का उल्लेख किया गया है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न का उत्तर गद्यांश में दिए गए मुक्त बाज़ार के प्रत्यक्ष लाभों पर आधारित होना चाहिए।
- लाभों में शिक्षा-रोज़गार के अवसर तथा हिंदी के प्रयोग और प्रसार में वृद्धि दोनों शामिल हैं।

चरण 1: शिक्षा और रोज़गार के अवसर गद्यांश के आरंभ में बताया गया है कि मुक्त बाज़ार की अर्थव्यवस्था ने शिक्षा और रोज़गार के अनेक अवसर प्रदान किए हैं। इस प्रकार उसका लाभ केवल वस्तुओं की खरीद-बिक्री तक सीमित नहीं है, बल्कि लोगों के अध्ययन और काम के अवसरों के विस्तार से भी जुड़ा है।

चरण 2: हिंदी के लिए नए अवसर बाज़ार के अधिकांश उपभोक्ता हिंदीभाषी हैं। उनसे संपर्क स्थापित करने के लिए उत्पाद-विपणन, व्यापार तथा विज्ञापन में हिंदी की आवश्यकता बढ़ी है। इससे हिंदी का व्यवहार और प्रचार-प्रसार बढ़ा है। हिंदीतर राज्यों के प्रमुख नगरों में भी बाज़ार से जुड़ाव उसके विस्तार का एक कारण बना है।

चरण 3: निष्कर्ष मुक्त बाज़ार ने शिक्षा और रोज़गार के अनेक अवसर दिए हैं तथा उत्पाद-विपणन, व्यापार और विज्ञापन में हिंदी की आवश्यकता बढ़ाकर उसके प्रयोग और प्रचार-प्रसार को बढ़ावा दिया है।

त्वरित सुझाव: लाभों को दो पक्षों में व्यवस्थित करें: शिक्षा-रोज़गार और हिंदी के प्रयोग का विस्तार; अतिरिक्त आँकड़े न जोड़ें।

2(ग). मुक्त बाज़ार से हिंदी को क्या लाभ हुआ है? क्यों? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उत्तर में हिंदी को हुआ लाभ और उस लाभ का कारण अलग-अलग स्पष्ट करना है।
- उपभोक्ताओं की भाषा बाज़ार की संप्रेषण-भाषा को प्रभावित करती है।

चरण 1: हिंदी को हुआ लाभ मुक्त बाज़ार से हिंदी के प्रयोग और प्रचार-प्रसार को बढ़ावा मिला है। उत्पाद-विपणन, व्यापार और विज्ञापन में हिंदी की आवश्यकता बढ़ी है। हिंदीतर राज्यों, विशेषकर दक्षिण के प्रमुख नगरों में भी बाज़ार के साथ जुड़ाव हिंदी के प्रसार का एक कारक बना है। इससे हिंदी का व्यावहारिक क्षेत्र विस्तृत हुआ है।

चरण 2: लाभ का कारण गद्यांश स्पष्ट करता है कि बाज़ार के अधिसंख्य उपभोक्ता हिंदीभाषी हैं। उत्पाद और सेवाओं की जानकारी उन तक पहुँचाने तथा व्यापारिक संवाद स्थापित करने के लिए उनकी भाषा का प्रयोग आवश्यक होता है। इसी कारण बाज़ार में हिंदी का महत्व बढ़ा और उसका बढ़ता प्रयोग उसके प्रसार का साधन बना।

चरण 3: निष्कर्ष मुक्त बाज़ार से हिंदी का प्रयोग, महत्व और प्रचार-प्रसार बढ़ा है, क्योंकि अधिकांश उपभोक्ता हिंदीभाषी हैं और उन तक पहुँचने के लिए विपणन, व्यापार तथा विज्ञापन में हिंदी आवश्यक है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले लाभ लिखें, फिर अधिकांश उपभोक्ताओं के हिंदीभाषी होने को उसका स्पष्ट कारण बनाएँ।

2(घ). दक्षिण भारत में हिंदी की क्या स्थिति है? क्यों? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न में हिंदी की स्थिति और उसके कारण, दोनों की पहचान आवश्यक है।
- गद्यांश में हिंदी के प्रसार का संबंध बाज़ार की व्यावहारिक आवश्यकता से जोड़ा गया है।

चरण 1: स्थिति पहचानिए गद्यांश के अनुसार हिंदीतर भाषी राज्यों में, विशेषकर दक्षिण भारत के प्रमुख नगरों में, हिंदी का प्रचार-प्रसार बढ़ रहा है। यहाँ उत्तर को प्रमुख नगरों के संदर्भ में रखना चाहिए, क्योंकि लेखक ने इसी क्षेत्र की स्थिति का उल्लेख किया है।

चरण 2: प्रसार का कारण स्पष्ट कीजिए इस प्रसार का एक प्रमुख कारण हिंदी का बाज़ार से जुड़ना है। बहुत बड़ी संख्या में उपभोक्ता हिंदीभाषी हैं, इसलिए उत्पादों के विपणन, व्यापार और विज्ञापन में हिंदी उपयोगी और आवश्यक बनती है। उपभोक्ताओं तक पहुँचने की यह आवश्यकता दक्षिण के नगरों में हिंदी का व्यवहार बढ़ाती है।

चरण 3: निष्कर्ष दक्षिण भारत के प्रमुख नगरों में हिंदी का प्रचार-प्रसार बढ़ रहा है। इसका कारण उसका बाज़ार से जुड़ाव है; हिंदीभाषी उपभोक्ताओं तक पहुँचने के लिए व्यापार, विपणन और विज्ञापन में हिंदी की आवश्यकता पड़ती है।

त्वरित सुझाव: स्थिति बताते समय प्रमुख नगरों का उल्लेख करें और कारण में बाज़ार से हिंदी का संबंध अवश्य लिखें।

2(ङ). साम्राज्यवादी दौर में भारतीय विदेशों में क्यों और कहाँ-कहाँ ले जाए गए? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश से प्रवास का कारण और संबंधित देशों के नाम अलग-अलग चुनने हैं।
- बँधुआ मज़दूरी के लिए ले जाए जाने और आज की सांस्कृतिक भूमिका में अंतर समझना आवश्यक है।

चरण 1: क्यों ले जाए गए, यह बताइए साम्राज्यवादी दौर में भारतीयों को विदेशों में मज़दूरी कराने के लिए ले जाया गया था। गद्यांश आगे स्पष्ट करता है कि वे बँधुआ मज़दूर के रूप में भेजे गए थे। इसलिए यहाँ शिक्षा, पर्यटन या स्वेच्छा से व्यापार करने को प्रवास का कारण नहीं बताया जा सकता।

चरण 2: देशों की पहचान कीजिए ऐसे प्रवासियों के संदर्भ में गद्यांश मॉरिशस, फिज़ी, ट्रिनीडाड और सूरिनाम के नाम देता है। दुबई, रूस और ब्रिटेन का उल्लेख हिंदी की परिचितता के प्रसंग में है; उन्हें इस प्रश्न के देशों की सूची में मिलाना उचित नहीं होगा।

चरण 3: निष्कर्ष साम्राज्यवादी दौर में भारतीयों को बँधुआ मज़दूरों के रूप में काम कराने के लिए विदेशों में ले जाया गया था। गद्यांश में मॉरिशस, फिज़ी, ट्रिनीडाड और सूरिनाम जैसे देशों का उल्लेख है।

त्वरित सुझाव: प्रवास वाले वाक्य से ही देश चुनें; हिंदी के अन्य प्रसार-क्षेत्रों को इस सूची में न मिलाएँ।

2(च). उन प्रवासियों की पीड़ा क्या है और कहाँ तक ठीक है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पीड़ा का उल्लेख गद्यांश से लेना है और उसके औचित्य को उसी के तथ्यों से स्पष्ट करना है।
- भारतीय मूल पर गर्व तथा हिंदी के संरक्षण का संबंध भारत के समर्थन के दायित्व से है।

चरण 1: प्रवासियों की पीड़ा बताइए प्रवासियों की पीड़ा यह है कि भारत ने अपने भारतवंशियों को भुला दिया है। वे भारतीय मूल के होने पर गर्व करते हैं और हिंदी को पूरे उत्साह से अपनाए हुए हैं, फिर भी उन्हें अपनी मूल भूमि से अपेक्षित जुड़ाव तथा समर्थन का अभाव अनुभव होता है।

चरण 2: पीड़ा के औचित्य का आधार दीजिए यह पीड़ा उचित है, क्योंकि कठिन परिस्थितियों में विदेश गए इन लोगों ने भारतीयता और हिंदी को जीवित रखा है। उनके यहाँ हिंदी साहित्य और पत्रकारिता की भाषा भी है तथा वे भारत के सांस्कृतिक दूत हैं। इसलिए गद्यांश के अनुसार भारत का दायित्व है कि उन्हें बौद्धिक और संसाधनगत समर्थन प्रदान करे।

चरण 3: निष्कर्ष उनकी पीड़ा है कि भारत ने अपने भारतवंशियों को भुला दिया है। यह पीड़ा उचित है, क्योंकि वे विदेशों में भारतीयता

और हिंदी को सँजोए हुए भारत के सांस्कृतिक दूत हैं; अतः भारत से बौद्धिक तथा संसाधनगत सहयोग की अपेक्षा स्वाभाविक है।

त्वरित सुझाव: औचित्य लिखते समय प्रवासियों के हिंदी और भारतीय संस्कृति के संरक्षण को अपने तर्क का आधार बनाएँ।

2(छ). "वे बँधुआ मज़दूर आज भारत के सांस्कृतिक दूत हैं" – आशय स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आशय स्पष्ट करने के लिए वाक्य के ऐतिहासिक संदर्भ और वर्तमान भूमिका को जोड़ना चाहिए।
- सांस्कृतिक दूत से अभिप्राय भारतीय भाषा और भारतीयता के प्रसार में योगदान देने वाले लोगों से है।

चरण 1: ऐतिहासिक संदर्भ स्पष्ट कीजिए गद्यांश में उन भारतीयों की चर्चा है जो साम्राज्यवादी समय में बँधुआ मज़दूर बनाकर विदेशों में ले जाए गए थे। उनकी पहचान पहले श्रमिकों की थी, लेकिन प्रवास में भी उन्होंने भारतीय मूल के होने पर गर्व करना और हिंदी को अपनाए रखना नहीं छोड़ा।

चरण 2: वर्तमान सांस्कृतिक भूमिका समझाइए इन प्रवासियों ने विदेशों में हिंदी को केवल बाज़ार तक सीमित नहीं रहने दिया; वहाँ वह साहित्य और पत्रकारिता की भाषा भी बनी। इस प्रकार वे अपनी भाषा और भारतीयता को जीवित रखते तथा दूसरों तक पहुँचाते हैं। लेखक ने उनकी भूमिका की तुलना ऋषियों और बौद्धभिक्षुओं के भारतीयता-प्रचार से की है।

चरण 3: निष्कर्ष आशय यह है कि बँधुआ मज़दूर बनाकर विदेश भेजे गए भारतीयों ने वहाँ हिंदी और भारतीयता को जीवित रखा तथा उनका प्रचार किया। भारतीय मूल पर गर्व करते हुए वे विदेशों में भारत की सांस्कृतिक पहचान के प्रतिनिधि बन गए हैं।

त्वरित सुझाव: सांस्कृतिक दूत का अर्थ सरकारी पद न मानें; भाषा और भारतीयता के संरक्षण-प्रसार से उसका आशय समझाएँ।

2(ज). हिंदी के अधिक प्रचार-प्रसार के लिए भारत को क्या करना चाहिए – दो सुझाव दीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- दो सुझाव गद्यांश में व्यक्त भारत की प्रतिबद्धता और दायित्व से चुनने हैं।
- अंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा तथा विश्वभर के हिंदीभाषियों का समर्थन, हिंदी-प्रसार के पूरक उपाय हैं।

चरण 1: अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रयास सुझाइए भारत को हिंदी को संयुक्त राष्ट्र की भाषा बनाने के लिए प्रभावी और निरंतर प्रयास करने चाहिए। गद्यांश में इस लक्ष्य के प्रति भारत की प्रतिबद्धता कही गई है। इससे हिंदी की अंतरराष्ट्रीय पहचान और व्यवहार को व्यापक आधार देने की दिशा स्पष्ट होती है।

चरण 2: विश्वभर के हिंदीभाषियों को सहयोग सुझाइए भारत को विश्वभर में बसे हिंदीभाषियों और भारतवंशियों को बौद्धिक तथा संसाधनगत समर्थन प्रदान करना चाहिए। ये लोग हिंदी को साहित्य और पत्रकारिता में भी अपनाए हुए हैं। उनके भाषा-संरक्षण तथा प्रसार के कार्यों को सहयोग देना गद्यांश में बताए गए भारत के दायित्व की पूर्ति होगी।

चरण 3: निष्कर्ष भारत को हिंदी को संयुक्त राष्ट्र की भाषा बनाने के लिए निरंतर प्रयास करने चाहिए। साथ ही, विश्वभर में बसे हिंदीभाषियों को बौद्धिक और संसाधनगत सहयोग देना चाहिए, ताकि उनके माध्यम से हिंदी का संरक्षण तथा प्रचार-प्रसार बढ़ सके।

त्वरित सुझाव: दो सुझाव अलग रखिए: संयुक्त राष्ट्र में हिंदी की प्रतिष्ठा और विश्वभर के हिंदीभाषियों को सहयोग।

3. 'प्राथमिक कक्षाओं में शिक्षा का माध्यम मातृभाषा ही होना चाहिए।' इसके पक्ष या विपक्ष में तर्क देते हुए किसी समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखिए।

अथवा — ग्रामीण अंचलों में किसानों की शोचनीय दशा के कारणों का विश्लेषण करते हुए अपने राज्य के कृषि मंत्री को पत्र लिखिए।

[5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- औपचारिक पत्र में प्रेषक का पता, दिनांक, प्राप्तकर्ता का पद और पता, विषय, संबोधन, मुख्य कथ्य तथा समापन क्रम से आते हैं।
- संपादक को लिखे पत्र में सार्वजनिक हित के प्रश्न पर स्पष्ट मत और उसके तर्क दिए जाते हैं; मंत्री को लिखे पत्र में समस्या के कारणों के साथ व्यावहारिक सुझाव रखे जाते हैं।

चरण 1: प्रारूप और विषयवस्तु की योजना पहले विकल्प में मातृभाषा के पक्ष में विचार रखे जाएँगे। बालक की सहज समझ, अभिव्यक्ति, परिवार से संवाद और सांस्कृतिक जुड़ाव प्रमुख तर्क होंगे। दूसरी भाषाओं को सीखने का विरोध किए बिना प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा के माध्यम का समर्थन करना है। दूसरे विकल्प में किसान की आर्थिक स्थिति के कारणों का विश्लेषण करके सिंचाई, ऋण, उचित मूल्य तथा भंडारण संबंधी उपाय सुझाने हैं। नीचे दोनों विकल्पों के स्वतंत्र नमूना पत्र दिए गए हैं।

चरण 2: पहला विकल्प: संपादक को पत्र 24, शांति विहार

लखनऊ

15 मार्च, 2016

सेवा में,

संपादक महोदय

दैनिक जागरण

लखनऊ

विषय: प्राथमिक शिक्षा में मातृभाषा को माध्यम बनाने के संबंध में।

महोदय,

आपके लोकप्रिय समाचार-पत्र के माध्यम से मैं प्राथमिक कक्षाओं में मातृभाषा को शिक्षा का माध्यम बनाने के पक्ष में अपने विचार व्यक्त करना चाहता हूँ।

बालक घर और परिवेश में जो भाषा सीखता है, उसी में वह सहजता से सोचता और अपनी जिज्ञासाएँ व्यक्त करता है। मातृभाषा में पढ़ने से उसका ध्यान अपरिचित शब्दों को रटने के बजाय विषय को समझने पर केंद्रित होता है। वह कक्षा में प्रश्न पूछने और चर्चा में भाग लेने का आत्मविश्वास प्राप्त करता है। माता-पिता भी उसकी पढ़ाई में सहयोग कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त मातृभाषा स्थानीय जीवन, लोकसाहित्य और सांस्कृतिक अनुभवों से उसका संबंध बनाए रखती है।

अन्य भाषाओं का ज्ञान भी आवश्यक है; उन्हें विषय के रूप में सिखाया जा सकता है। किंतु आरंभिक शिक्षा का माध्यम बालक की समझ के अनुकूल होना चाहिए। इसके लिए मातृभाषा में गुणवत्तापूर्ण पाठ्यपुस्तकें और प्रशिक्षित शिक्षक उपलब्ध कराए जाएँ।

कृपया इस विषय पर जनमत निर्माण हेतु मेरे विचार प्रकाशित करें।

धन्यवाद।

भवदीय

अमित कुमार

चरण 3: दूसरा विकल्प: कृषि मंत्री को पत्र ग्राम रामपुर, डाकघर हरिहरपुर

जिला सीतापुर, उत्तर प्रदेश

15 मार्च, 2016

सेवा में,

माननीय कृषि मंत्री

उत्तर प्रदेश शासन

लखनऊ

विषय: ग्रामीण किसानों की शोचनीय दशा सुधारने के संबंध में।

महोदय,

मैं आपका ध्यान ग्रामीण अंचलों में किसानों की दयनीय स्थिति की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। देश को अन्न उपलब्ध कराने वाला किसान स्वयं आर्थिक असुरक्षा में जीवन बिता रहा है।

खेती की लागत निरंतर बढ़ रही है, जबकि छोटे किसानों को अपनी उपज का उचित मूल्य नहीं मिल पाता। सिंचाई के पर्याप्त साधन न होने से वे वर्षा पर निर्भर रहते हैं। सूखा, बाढ़ अथवा ओलावृष्टि उनकी मेहनत नष्ट कर देती है। सस्ता संस्थागत ऋण समय पर न मिलने के कारण कई किसान महाजनों से ऊँचे ब्याज पर कर्ज लेते हैं। भंडारण और परिवहन के अभाव में उन्हें कटाई के तुरंत बाद कम दाम पर फसल बेचनी पड़ती है। कृषि संबंधी तकनीकी जानकारी का अभाव भी उत्पादन को प्रभावित करता है।

अतः अनुरोध है कि सिंचाई सुविधाओं का विस्तार, सुलभ ऋण, समय पर फसल बीमा भुगतान और पारदर्शी खरीद व्यवस्था सुनिश्चित की जाए। गाँवों में भंडारण केंद्र और कृषि परामर्श सेवाएँ भी उपलब्ध कराई जाएँ। इन उपायों से किसान की आय और आत्मनिर्भरता बढ़ सकती है।

कृपया इस दिशा में शीघ्र प्रभावी कार्रवाई करें।

धन्यवाद।

भवदीय

रमेश कुमार

ग्रामवासी

चरण 4: निष्कर्ष दोनों पत्रों में संबंधित अधिकारी को संबोधित करते हुए विषय स्पष्ट किया गया है और तर्कों अथवा कारणों के आधार पर आवश्यक आग्रह रखा गया है।

त्वरित सुझाव: संपादक के पत्र में सार्वजनिक तर्क दें और मंत्री के पत्र में कारणों के साथ ठोस समाधान अवश्य जोड़ें।

---

4. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए:

(क) भ्रष्टाचार की समस्या (ख) प्रगति पथ पर भारत (ग) समाचार-पत्र (घ) क्या नहीं कर सकती नारी [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निबंध में भूमिका, विषय का क्रमबद्ध विवेचन और सार्थक उपसंहार होना चाहिए। प्रत्येक अनुच्छेद एक मुख्य विचार को विकसित करे।
- सामाजिक विषयों में समस्या अथवा उपलब्धि के कारण, प्रभाव और आगे की दिशा का संतुलित विवेचन आवश्यक है।

चरण 1: रूपरेखा और प्रस्तुति प्रत्येक विकल्प के लिए अलग शीर्षक और स्वतंत्र निबंध दिया गया है। भ्रष्टाचार में कारण, दुष्परिणाम और समाधान; भारत की प्रगति में उपलब्धियाँ और चुनौतियाँ; समाचार-पत्र में उपयोगिता और उत्तरदायित्व; तथा नारी विषय में क्षमताएँ और समान अवसर मुख्य बिंदु हैं। भाषा स्पष्ट रखनी है और असत्य आँकड़े अथवा अप्रमाणित उद्धरण नहीं देने हैं।

चरण 2: विकल्प (क): भ्रष्टाचार की समस्या **भ्रष्टाचार की समस्या**

भ्रष्टाचार सार्वजनिक या निजी दायित्व का अनुचित लाभ के लिए दुरुपयोग है। रिश्वत, पक्षपात, धन का गबन और नियमों की अनदेखी इसके विविध रूप हैं। यह केवल आर्थिक अपराध नहीं, समाज के नैतिक स्वास्थ्य के लिए भी गंभीर चुनौती है।

अत्यधिक धनलिप्सा, जटिल प्रशासनिक प्रक्रियाएँ, जवाबदेही का अभाव तथा दंड से बच निकलने की आशा भ्रष्टाचार को बढ़ाते हैं। जब योग्यता के स्थान पर सिफारिश और पैसे को महत्त्व मिलता है, तब ईमानदार नागरिक का विश्वास टूटता है। विकास योजनाओं का धन जरूरतमंदों तक नहीं पहुँचता और सेवाओं की गुणवत्ता गिरती है। इसका सबसे अधिक बोझ गरीब पर पड़ता है।

इस समस्या का समाधान केवल कानून बनाने से नहीं होगा। प्रक्रियाएँ सरल और पारदर्शी हों, शिकायतों पर समयबद्ध कार्रवाई हो तथा दोषियों को निष्पक्ष दंड मिले। नागरिक भी सुविधा पाने के लिए अनुचित रास्ता अपनाने से बचें। विद्यालय और परिवार ईमानदारी को आचरण में प्रतिष्ठित करें।

भ्रष्टाचार के विरुद्ध संघर्ष शासन और समाज की साझा जिम्मेदारी है। जागरूक नागरिक, उत्तरदायी संस्थाएँ और नैतिक साहस मिलकर ही स्वच्छ व्यवस्था का निर्माण कर सकते हैं।

चरण 3: विकल्प (ख): प्रगति पथ पर भारत **प्रगति पथ पर भारत**

भारत विविधताओं से भरा देश है, जो स्वतंत्रता के बाद अनेक क्षेत्रों में आगे बढ़ा है। प्रगति का अर्थ केवल उत्पादन या बड़े भवनों में वृद्धि नहीं, बल्कि प्रत्येक नागरिक को सम्मानपूर्ण जीवन के अवसर देना भी है।

कृषि, उद्योग, विज्ञान, अंतरिक्ष अनुसंधान, संचार और शिक्षा में भारत की उपलब्धियाँ हमारी सामूहिक क्षमता का परिचय देती हैं। परिवहन और तकनीक ने दूरियों को कम किया है। लोकतांत्रिक संस्थाएँ नागरिकों को देश की दिशा तय करने में भागीदारी देती हैं। युवा शक्ति और उद्यमशीलता विकास की बड़ी संभावनाएँ हैं।

फिर भी गरीबी, बेरोजगारी, अशिक्षा और असमानता जैसी चुनौतियाँ बनी हुई हैं। गाँवों और शहरों के अवसरों में अंतर है। पर्यावरण को नुकसान पहुँचाने वाला विकास भी लंबे समय तक टिकाऊ नहीं हो सकता। इसलिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, कौशल, स्वास्थ्य और स्वच्छ पर्यावरण पर ध्यान देना आवश्यक है।

भारत की वास्तविक प्रगति तब होगी जब उसकी उपलब्धियों का लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुँचे। वैज्ञानिक दृष्टि, सामाजिक सद्भाव और कर्तव्यनिष्ठ नागरिकता के सहारे हमारा देश समावेशी विकास के पथ पर दृढ़ता से आगे बढ़ सकता है।

चरण 4: विकल्प (ग): समाचार-पत्र **समाचार-पत्र**

समाचार-पत्र समाज की गतिविधियों और विचारों को पाठकों तक पहुँचाने का महत्त्वपूर्ण माध्यम है। वह देश-विदेश की घटनाओं से परिचित कराने के साथ नागरिकों को अपने परिवेश के प्रति सजग बनाता है।

राजनीति, अर्थव्यवस्था, खेल, विज्ञान और संस्कृति से जुड़ी खबरें हमारी जानकारी बढ़ाती हैं। संपादकीय तथा विचारपरक लेख किसी घटना के विविध पक्षों को समझने में सहायता करते हैं। रोजगार संबंधी सूचनाएँ, शैक्षिक सामग्री और स्थानीय समाचार अलग-अलग वर्गों के लिए उपयोगी होते हैं। पाठकों के पत्र सामान्य नागरिक की समस्याओं को सार्वजनिक मंच प्रदान करते हैं।

इतनी प्रभावशाली भूमिका के कारण समाचार-पत्र का उत्तरदायित्व भी बड़ा है। अपुष्ट समाचार, सनसनीखेज शीर्षक और पक्षपात समाज को भ्रमित कर सकते हैं। समाचार और विज्ञापन के बीच स्पष्ट अंतर रहना चाहिए। तथ्य की जाँच, निष्पक्षता और मानवीय संवेदनशीलता पत्रकारिता की आवश्यक शर्तें हैं।

पाठक को भी प्रत्येक बात आँख मूँदकर स्वीकार नहीं करनी चाहिए। विवेकपूर्ण अध्ययन और विश्वसनीय स्रोतों से तुलना उसे जागरूक बनाती है। उत्तरदायी समाचार-पत्र और सजग पाठक मिलकर स्वस्थ लोकतांत्रिक संवाद को मजबूत करते हैं।

चरण 5: विकल्प (घ): क्या नहीं कर सकती नारी **क्या नहीं कर सकती नारी**

नारी की क्षमता किसी एक भूमिका तक सीमित नहीं है। परिवार, समाज और राष्ट्र के निर्माण में उसका योगदान व्यापक है। अवसर और विश्वास मिलने पर वह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अपनी प्रतिभा सिद्ध कर सकती है।

शिक्षा, चिकित्सा, प्रशासन, विज्ञान, खेल और उद्यम में महिलाओं ने उल्लेखनीय कार्य किया है। वे संवेदनशील देखभाल के साथ साहसपूर्ण निर्णय लेने की क्षमता भी रखती हैं। ग्रामीण महिला का श्रम खेती और परिवार की अर्थव्यवस्था को संभालता है, यद्यपि उसे अक्सर पर्याप्त पहचान नहीं मिलती।

नारी की प्रगति में बाधा उसकी योग्यता नहीं, बल्कि भेदभावपूर्ण सामाजिक धारणाएँ हैं। बालिकाओं की शिक्षा रोकना, असुरक्षित वातावरण और घरेलू जिम्मेदारियों का असमान वितरण अवसर सीमित करते हैं। इन बाधाओं को दूर करने के लिए समान शिक्षा, सुरक्षा, संपत्ति और रोजगार के अधिकारों का प्रभावी पालन आवश्यक है। पुरुषों को भी घरेलू कार्य और देखभाल की जिम्मेदारी साझा करनी चाहिए।

नारी को दया का पात्र समझने के बजाय स्वतंत्र व्यक्तित्व के रूप में स्वीकार करना होगा। सम्मान, समान अवसर और निर्णय की स्वतंत्रता मिले तो उसकी उपलब्धियों की सीमा तय करना संभव नहीं है। नारी की उन्नति पूरे समाज की उन्नति है।

चरण 6: निष्कर्ष चारों विषयों के निबंध स्वतंत्र रूप से भूमिका, क्रमबद्ध विचार-विस्तार और उपसंहार के साथ प्रस्तुत हैं। परीक्षा में चुने गए विषय को इसी संगति और स्पष्टता से विकसित करना चाहिए।

त्वरित सुझाव: निबंध शुरू करने से पहले भूमिका, तीन प्रमुख विचार और उपसंहार की छोटी रूपरेखा मन में बना लें।

5. 'नगरों की ओर पलायन' अथवा 'महँगाई का दानव' विषय पर एक फ़ीचर का आलेख लिखिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फ़ीचर तथ्य, मानवीय अनुभव और संवेदनशील प्रस्तुति के माध्यम से किसी सामाजिक विषय को रोचक बनाता है।
- उपयुक्त शीर्षक, आकर्षक आरंभ, कारणों और प्रभावों का विस्तार तथा सार्थक अंत इसकी संरचना बनाते हैं।

चरण 1: प्रारूप और विषयवस्तु की योजना दोनों वैकल्पिक विषयों के स्वतंत्र नमूने नीचे दिए गए हैं। प्रत्येक में शीर्षक और लेखक का नाम देकर सामान्य जीवन के दृश्य से आरंभ किया गया है। फिर समस्या के कारण, उसका मानवीय प्रभाव और व्यावहारिक उपाय रखे गए हैं। फ़ीचर में अप्रमाणित आँकड़ों के बजाय परिचित सामाजिक स्थितियों का उपयोग किया गया है।

चरण 2: पहले विषय का पूर्ण नमूना नगरों की ओर पलायन: पीछे छूटता आँगन

लेखक: अजय कुमार

बस की खिड़की से झाँकता युवक धीरे-धीरे ओझल होते अपने गाँव को देख रहा है। उसके झोले में कुछ कपड़े हैं और मन में नौकरी की उम्मीद। पीछे बूढ़े माता-पिता, छोटी खेती और बचपन का आँगन छूट गया है। ऐसी अनगिनत यात्राएँ गाँव और शहर की बदलती कहानी कहती हैं।

खेती की अनिश्चित आय, स्थानीय रोजगार की कमी और अच्छी शिक्षा तथा चिकित्सा सुविधाओं का अभाव लोगों को नगरों की ओर खींचता है। शहर का आकर्षण केवल चमकती सड़कें नहीं, नियमित कमाई और बेहतर भविष्य की आशा भी है। किंतु यहाँ पहुँचते ही महँगा किराया, लंबी यात्राएँ और असुरक्षित काम उनका स्वागत करते हैं। कभी पूरा परिवार एक छोटे कमरे में सिमट जाता है। गाँव में खेत और बुजुर्ग अकेले रह जाते हैं।

पलायन रोकने का अर्थ लोगों की स्वतंत्रता रोकना नहीं है। आवश्यकता ऐसी परिस्थितियाँ बनाने की है कि गाँव में रहना मजबूरी न हो और शहर जाना विवशता न बने। स्थानीय उद्योग, सिंचाई, अच्छी सड़कें, विद्यालय और स्वास्थ्य केंद्र गाँव को अवसर दे सकते हैं। शहरों में भी श्रमिकों को सम्मानजनक आवास और सुरक्षा मिलनी चाहिए। विकास तभी सार्थक होगा, जब घर छोड़ने वाला युवक अपना भविष्य चुन सके, उससे भागने को विवश न हो।

चरण 3: दूसरे विषय का पूर्ण नमूना महँगाई का दानव: सिकुड़ती थाली, बढ़ती चिंता

लेखक: अजय कुमार

सब्जी की दुकान पर खड़ी गृहिणी थैले में रखे टमाटर फिर गिनती है। दाम सुनकर वह कुछ वापस रख देती है। घर का बजट उसके मन में खुली किताब की तरह है, जिसमें खर्च की पंक्तियाँ बढ़ रही हैं और आमदनी का पन्ना वहीं ठहरा हुआ है। महँगाई का सबसे सच्चा चेहरा ऐसे छोटे निर्णयों में दिखाई देता है।

अनाज, दूध, ईंधन और परिवहन महँगे होने से परिवार की आवश्यकताएँ पूरी करना कठिन होता जाता है। सीमित वेतन पाने वाला व्यक्ति बचत घटाता है; दैनिक मजदूर कभी पौष्टिक भोजन तक कम कर देता है। बच्चों की पढ़ाई, बुजुर्गों की दवा और अचानक आने वाला खर्च चिंता बढ़ाते हैं। उत्पादन और आपूर्ति में बाधा, परिवहन का बढ़ता खर्च, जमाखोरी तथा वितरण की कमियाँ कीमतों पर दबाव डाल सकती हैं। हर वस्तु की महँगाई का कारण एक जैसा नहीं होता।

केवल परिवारों को खर्च घटाने की सलाह देना पर्याप्त नहीं है। आवश्यक वस्तुओं की उपलब्धता, प्रभावी सार्वजनिक वितरण, जमाखोरी पर कार्रवाई और किसानों को बेहतर भंडारण तथा बाजार सुविधाएँ देना जरूरी है। उपभोक्ता अनावश्यक खरीद और भोजन की बर्बादी घटा सकते हैं, लेकिन व्यवस्था की जिम्मेदारी भी तय होनी चाहिए। जब कमाने वाले हाथों को उचित आय और बाजार को जिम्मेदार निगरानी मिलेगी, तभी घर की थाली से डर का यह साया हट सकेगा।

चरण 4: निष्कर्ष दोनों फ़ीचरों में सामाजिक समस्या को रोजमर्रा के जीवन से जोड़कर उसके कारण, प्रभाव और समाधान का संवेदनशील चित्र प्रस्तुत किया गया है।

त्वरित सुझाव: फ़ीचर का आरंभ किसी छोटे जीवंत दृश्य से करें और अंत को उसी मानवीय चिंता के समाधान से जोड़ें।

6(क). 'समाचार' क्या है? कोई एक परिभाषा स्पष्ट कीजिए। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समाचार की पहचान नवीनता, सत्यता और जनरुचि से होती है।
- समाचार का आधार घटना या तथ्य होता है; केवल निजी राय पर्याप्त नहीं है।

चरण 1: परिभाषा स्पष्ट करना किसी नवीन, सत्य और जनरुचि से संबंधित घटना या तथ्य का संचार माध्यमों द्वारा दिया गया विवरण समाचार कहलाता है। इसमें लोगों के लिए उपयोगी या महत्त्वपूर्ण जानकारी होती है।

चरण 2: परिभाषा का आशय किसी नगर में नई सार्वजनिक बस सेवा शुरू होने की प्रमाणित सूचना समाचार है, क्योंकि वह नई भी है और अनेक लोगों के जीवन से संबंधित भी। सुनी-सुनाई अफवाह को सत्यापन के बिना समाचार नहीं कहा जा सकता।

चरण 3: निष्कर्ष समाचार नवीन, सत्य और जनरुचि से संबंधित घटना या तथ्य का विवरण है।

त्वरित सुझाव: परिभाषा में नवीनता, सत्यता और जनरुचि तीनों आधार जोड़ें; केवल घटना कहना पर्याप्त नहीं है।

6(ख). प्रिंट माध्यम की दो उपयोगिताएँ लिखिए। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रिंट माध्यम लिखित सामग्री को स्थायी रूप में उपलब्ध कराता है।
- पाठक मुद्रित सामग्री को अपनी सुविधा और गति से पढ़ सकता है।

चरण 1: पहली उपयोगिता पाठक समाचार-पत्र, पत्रिका या पुस्तक को अपनी सुविधानुसार कभी भी पढ़ सकता है। कठिन अंश को दोबारा पढ़कर समझना और आवश्यक स्थान पर रुकना संभव होता है। इसलिए पढ़ने की गति पर पाठक का नियंत्रण रहता है।

चरण 2: दूसरी उपयोगिता मुद्रित सामग्री को सुरक्षित रखकर भविष्य में संदर्भ के रूप में उपयोग किया जा सकता है। किसी समाचार, विचार या सूचना को फिर से देखने, तुलना करने तथा अध्ययन में उद्धृत करने के लिए उसका संग्रह उपयोगी होता है।

चरण 3: निष्कर्ष प्रिंट माध्यम की दो उपयोगिताएँ हैं: सुविधानुसार बार-बार पढ़ सकना और सामग्री को भविष्य के संदर्भ हेतु सुरक्षित रख सकना।

त्वरित सुझाव: उपयोगिता लिखते समय पाठक को मिलने वाला लाभ बताएँ, जैसे पुनर्पाठ और भविष्य के लिए संग्रह।

6(ग). संपादन के किन्हीं दो सिद्धांतों का उल्लेख कीजिए। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संपादन में सूचना की विश्वसनीयता और प्रस्तुति की सुबोधता का ध्यान रखा जाता है।
- तथ्य जाँच और स्पष्ट भाषा समाचार को उपयोगी बनाते हैं।

चरण 1: तथ्यपरकता समाचार में नाम, स्थान, तिथि, आँकड़े और घटनाक्रम सही होने चाहिए। प्रकाशन से पहले उनकी जाँच करना आवश्यक है। अपुष्ट सूचना को निश्चित तथ्य की तरह प्रस्तुत करना संपादन के इस सिद्धांत के विरुद्ध है।

चरण 2: स्पष्टता भाषा सरल, अर्थ स्पष्ट और वाक्य अनावश्यक उलझाव से मुक्त होने चाहिए। अस्पष्ट शब्दों तथा दोहरे अर्थ वाले कथनों को सुधारना चाहिए, ताकि पाठक सूचना को ठीक उसी अर्थ में समझ सके जिसमें वह दी गई है।

चरण 3: निष्कर्ष संपादन के दो सिद्धांत हैं: तथ्यपरकता अर्थात तथ्यों की शुद्धता, और स्पष्टता अर्थात सरल तथा असंदिग्ध प्रस्तुति।

त्वरित सुझाव: दो सिद्धांत अलग नामों से लिखें और प्रत्येक के साथ उसका एक स्पष्ट आशय अवश्य बताएँ।

6(घ). 'पीत पत्रकारिता' किसे कहा जाता है? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पत्रकारिता में सत्य और जनहित की उपेक्षा करके सनसनी फैलाना अनुचित है।
- पीत पत्रकारिता का उद्देश्य प्रायः पाठक संख्या या लोकप्रियता बढ़ाना होता है।

चरण 1: अर्थ बताना जिस पत्रकारिता में पाठकों या दर्शकों को आकर्षित करने के लिए सनसनीखेज, अतिरंजित, भ्रामक अथवा अपुष्ट खबरें प्रस्तुत की जाती हैं और सत्य तथा जनहित की उपेक्षा होती है, उसे पीत पत्रकारिता कहते हैं।

चरण 2: पहचान स्पष्ट करना किसी सामान्य घटना को बढ़ा-चढ़ाकर डरावनी सुर्खी देना या बिना पुष्टि के निजी जीवन से जुड़ा आरोप छापना इसके उदाहरण हो सकते हैं। किसी महत्त्वपूर्ण घटना की तथ्यपूर्ण और जिम्मेदार रिपोर्ट केवल रोचक होने से पीत पत्रकारिता नहीं बन जाती।

चरण 3: निष्कर्ष सत्य और जनहित की उपेक्षा करके सनसनी, अतिरंजना या अपुष्ट सूचनाओं के सहारे लोकप्रियता बटोरने वाली पत्रकारिता पीत पत्रकारिता है।

त्वरित सुझाव: पीत पत्रकारिता समझाते समय केवल सनसनी न लिखें; सत्य और जनहित की उपेक्षा भी स्पष्ट करें।

6(ङ). रेडियो समाचारों की भाषा की दो विशेषताएँ समझाइए। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रेडियो श्रव्य माध्यम है; श्रोता सुनते समय समाचार को तुरंत समझता है।
- रेडियो की भाषा सहज, स्पष्ट और बोलचाल के निकट होनी चाहिए।

चरण 1: सरल और बोलचाल की भाषा रेडियो समाचारों में परिचित तथा आसानी से समझ आने वाले शब्द प्रयोग किए जाते हैं। कठिन, बहुत लंबे या दुरूह शब्द सुनने में बाधा डाल सकते हैं। सहज भाषा के कारण श्रोता एक बार सुनकर ही समाचार का आशय ग्रहण कर पाता है।

चरण 2: छोटे और स्पष्ट वाक्य वाक्य छोटे, सीधे और एक विचार को स्पष्ट करने वाले होने चाहिए। जटिल उपवाक्यों और अनावश्यक विवरण से बचना चाहिए, क्योंकि श्रोता मुद्रित पंक्ति की तरह वाक्य पर वापस नहीं लौट सकता। उच्चारण की सुविधा भी शब्द-चयन में ध्यान देने योग्य है।

चरण 3: निष्कर्ष रेडियो समाचारों की भाषा सरल और बोलचाल के निकट तथा उसके वाक्य छोटे, सीधे और स्पष्ट होते हैं।

त्वरित सुझाव: रेडियो की दोनों विशेषताओं का कारण श्रवण से जोड़ें: श्रोता को सूचना एक बार सुनते ही समझनी है।

7. 'मेक इन इंडिया' अथवा 'हमारे सैनिक' विषय पर एक आलेख लिखिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आलेख में शीर्षक, लेखक का नाम, विषय का परिचय, तथ्यपरक विवेचन और सार्थक निष्कर्ष दिया जाता है।
- विषय के प्रमुख पक्षों को अनुच्छेदों में जोड़कर प्रस्तुत करना चाहिए; नारे के स्थान पर तर्क और उदाहरण आलेख को प्रभावी बनाते हैं।

चरण 1: पहले विषय की रूपरेखा 'मेक इन इंडिया' पर आलेख में देश में उत्पादन, रोजगार, कौशल, स्वदेशी उद्यम और गुणवत्ता पर चर्चा होगी। विकास के साथ पर्यावरण तथा श्रमिक हितों का संतुलन भी रखा जाएगा।

चरण 2: मॉडल आलेख: मेक इन इंडिया **मेक इन इंडिया: आत्मनिर्भरता की दिशा में कदम**

लेखक: एक विद्यार्थी

किसी देश की समृद्धि केवल वस्तुएँ खरीदने से नहीं, उपयोगी वस्तुओं का निर्माण करने से बढ़ती है। 'मेक इन इंडिया' भारत को उत्पादन का सशक्त केंद्र बनाने का आह्वान है। इसका उद्देश्य देश में उद्यम, निवेश और रोजगार के अवसर बढ़ाना है।

भारत में युवा श्रमशक्ति, बड़ा बाजार और विविध संसाधन उपलब्ध हैं। यदि युवाओं को तकनीकी प्रशिक्षण, आधुनिक उपकरण और उचित मार्गदर्शन मिले, तो वे उद्योगों की आवश्यकता पूरी करने के साथ अपने उद्यम भी स्थापित कर सकते हैं। छोटे उद्योगों को सरल ऋण, विश्वसनीय बिजली, परिवहन और बाजार मिलने से स्थानीय प्रतिभा को आगे आने का अवसर मिलेगा।

इस अभियान की सफलता केवल उत्पादन की मात्रा पर निर्भर नहीं है। उत्पादों की गुणवत्ता, उचित मूल्य और समय पर आपूर्ति भी आवश्यक हैं। अनुसंधान तथा नवाचार से भारतीय वस्तुएँ अंतरराष्ट्रीय बाजार में अपनी पहचान बना सकती हैं। साथ ही, उत्पादन प्रक्रिया में प्रदूषण कम करना और श्रमिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करना जरूरी है।

सरकार, उद्योग और नागरिकों के संयुक्त प्रयास से यह अभियान स्थायी परिणाम दे सकता है। हमें अच्छी भारतीय वस्तुओं को अपनाकर और अपने कौशल को निखारकर योगदान देना चाहिए। गुणवत्तापूर्ण उत्पादन ही आत्मनिर्भर और समृद्ध भारत की मजबूत नींव बनेगा।

चरण 3: दूसरे विषय की रूपरेखा 'हमारे सैनिक' में सीमाओं की रक्षा, कठिन जीवन, अनुशासन, आपदा-सेवा और नागरिकों के कर्तव्य प्रमुख बिंदु होंगे। सैनिक के साहस के साथ उसके परिवार के त्याग का भी उल्लेख किया जाएगा।

चरण 4: मॉडल आलेख: हमारे सैनिक **हमारे सैनिक: साहस और सेवा के प्रहरी**

लेखक: एक विद्यार्थी

हमारे सैनिक देश की सुरक्षा के सजग प्रहरी हैं। जब हम अपने घरों में निश्चिंत जीवन बिताते हैं, तब वे सीमाओं पर लगातार चौकसी करते हैं। उनका साहस, अनुशासन और कर्तव्यनिष्ठा पूरे देश के लिए प्रेरणा है।

सैनिक का जीवन कठिन परिश्रम और त्याग से भरा होता है। बर्फीली चोटियाँ हों या तपते रेगिस्तान, वह प्रतिकूल परिस्थितियों में भी अपने दायित्व से पीछे नहीं हटता। लंबे समय तक परिवार से दूर रहकर वह राष्ट्र की रक्षा को प्राथमिकता देता है। उसके परिवारजन भी इस सेवा में धैर्य और त्याग से सहभागी बनते हैं।

सैनिक केवल युद्ध के समय ही सेवा नहीं करते। बाढ़, भूकंप और अन्य आपदाओं में वे लोगों को सुरक्षित निकालने, सहायता पहुँचाने और व्यवस्था बहाल करने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। संकट में उनका संयम और तत्परता नागरिकों के मन में विश्वास जगाती है।

सैनिकों के प्रति सम्मान केवल नारों तक सीमित नहीं रहना चाहिए। उनके परिवारों और पूर्व सैनिकों के कल्याण के प्रति संवेदनशील होना हमारा दायित्व है। सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा, सामाजिक सद्भाव और जिम्मेदार नागरिक आचरण भी राष्ट्रसेवा हैं। हमारे सैनिक देश के लिए अपने सुखों का त्याग करते हैं; हमें भी अपने कर्तव्यों का पालन करके उनके प्रति सच्चा सम्मान व्यक्त करना चाहिए।

चरण 5: निष्कर्ष दोनों विकल्पों के पूर्ण मॉडल आलेख दिए गए हैं। परीक्षा में चुने गए विषय पर शीर्षक और लेखक के नाम सहित क्रमबद्ध आलेख प्रस्तुत करें।

त्वरित सुझाव: आलेख में भूमिका के बाद दो या तीन मुख्य पक्ष लिखें और अंत में विषय से जुड़ा व्यावहारिक सुझाव दें।

8. आँगन में लिए चाँद के टुकड़े को खड़ी
हाथों पे झुलाती है उसे गोद-भरी
रह-रह के हवा में जो लोका देती है
गूँज उठती है खिल-खिलाते बच्चे की हँसी। [6 अंक]

8(क). काव्यांश के वात्सल्य भाव को स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- वात्सल्य भाव माता-पिता के बच्चे के प्रति स्नेह, दुलार और उसकी प्रसन्नता में अनुभव होने वाले आनंद का भाव है।
- काव्यांश में माँ की गतिविधियाँ और बच्चे की खिलखिलाहट इस स्नेह का प्रत्यक्ष चित्र प्रस्तुत करती हैं।

चरण 1: माँ का स्नेहपूर्ण व्यवहार माँ आँगन में अपने छोटे बच्चे को गोद में लेकर खड़ी है। वह उसे हाथों पर झुलाती है और बार-बार हवा में उछालकर खिलाती है। बच्चे को प्रसन्न करने वाली ये सहज क्रियाएँ उसके कोमल मातृहृदय और गहरे दुलार को प्रकट करती हैं।

चरण 2: बच्चे की हँसी में वात्सल्य की अभिव्यक्ति माँ के खिलाने पर बच्चा खिलखिलाकर हँस पड़ता है और उसकी हँसी आँगन में गूँज उठती है। माँ और बच्चे के बीच आनंद का आत्मीय संबंध बनता है। 'चाँद के टुकड़े' जैसा संबोधन भी बताता है कि माँ की दृष्टि में बच्चा अत्यंत सुंदर और प्रिय है। इस प्रकार दुलार, खेल और हँसी से वात्सल्य का सजीव दृश्य बनता है।

चरण 3: निष्कर्ष माँ का बच्चे को झुलाना, हवा में उछालकर खिलाना और बच्चे का खिलखिलाना वात्सल्य भाव की सहज तथा आनंदपूर्ण अभिव्यक्ति है।

त्वरित सुझाव: वात्सल्य के उत्तर में केवल भाव का नाम न दें; माँ की क्रिया और बच्चे की प्रतिक्रिया दोनों जोड़ें।

8(ख). 'चाँद के टुकड़े को' – अलंकार सौंदर्य स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रूपक अलंकार में उपमेय पर उपमान का सीधा आरोप होता है; दोनों को अलग बताने वाला तुलनासूचक शब्द नहीं आता।
- अलंकार-सौंदर्य स्पष्ट करने के लिए उपमेय, उपमान और उससे उभरने वाली भाव-छवि बतानी चाहिए।

चरण 1: उपमेय और उपमान की पहचान 'चाँद के टुकड़े को' में उपमेय माँ की गोद में लिया हुआ छोटा बच्चा है और उपमान चाँद का टुकड़ा है। कवि ने बच्चे को चाँद जैसा कहने के बजाय सीधे चाँद का टुकड़ा कहा है। बच्चे और चाँद के टुकड़े के बीच अभेद स्थापित होने से यहाँ रूपक अलंकार है।

चरण 2: अलंकार से उत्पन्न सौंदर्य चाँद की उज्ज्वलता, सुंदरता और मोहकता बच्चे की कोमल तथा आकर्षक छवि को निखारती हैं। इस संबोधन में माँ का दुलार भी झलकता है: उसका बच्चा उसे अत्यंत प्यारा और मनोहर लगता है। इस प्रकार रूपक केवल रूप-सौंदर्य नहीं बढ़ाता, बल्कि माँ के वात्सल्य को भी अधिक प्रभावपूर्ण बनाता है।

चरण 3: निष्कर्ष यहाँ रूपक अलंकार है: बच्चे पर चाँद के टुकड़े का सीधा आरोप उसकी सुंदरता और माँ के स्नेह को साकार करता है।

त्वरित सुझाव: 'जैसा' के बिना सीधे बच्चे को चाँद का टुकड़ा कहना रूपक की पहचान है; उपमेय और उपमान अवश्य बताएँ।

8(ग). काव्यांश की भाषा की दो विशेषताएँ लिखिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाषा की विशेषता के साथ काव्यांश का उपयुक्त शब्द या वाक्यांश देने से उत्तर स्पष्ट और प्रमाणयुक्त बनता है।
- यहाँ बोलचाल की आत्मीय भाषा तथा ध्वनि और पुनरुक्ति से पैदा हुआ लय-सौंदर्य प्रमुख हैं।

चरण 1: सरल, बोलचाल की चित्रात्मक भाषा काव्यांश की भाषा सहज और घरेलू बोलचाल के निकट है। 'आँगन', 'गोद', 'हाथों पे' तथा 'लोका देती है' जैसे प्रयोग माँ के बच्चे को खिलाने का परिचित दृश्य सजीव बना देते हैं। भाषा की यह सरलता वात्सल्य के कोमल भाव को स्वाभाविक रूप से व्यक्त करती है।

चरण 2: लयात्मक और ध्वन्यात्मक भाषा 'रह-रह' की पुनरावृत्ति बच्चे को बार-बार उछालने की क्रिया का बोध कराती है और पंक्ति में लय लाती है। 'खिल-खिलाते' शब्द बच्चे की हँसी की ध्वनि का अनुभव कराता है। इससे पाठक को दृश्य देखने के साथ हँसी सुनने का भी आभास होता है। भाषा की यह संगीतात्मकता आनंद के वातावरण को अधिक प्रभावी बनाती है।

चरण 3: निष्कर्ष दो प्रमुख विशेषताएँ हैं: सहज, बोलचाल की चित्रात्मक भाषा तथा पुनरुक्ति और ध्वन्यात्मक शब्दों से युक्त लयात्मक भाषा।

त्वरित सुझाव: दो भाषा-विशेषताएँ लिखते समय प्रत्येक के साथ इसी काव्यांश का अलग शब्द-उदाहरण जोड़ें।

अथवा

8. सवेरा हुआ
खरगोश की आँखों जैसा लाल सवेरा
शरद आया पुलों को पार करते हुए
अपनी नई चमकीली साइकिल तेज चलाते हुए। [6 अंक]

8(क). खरगोश की आँखों से किसकी तुलना की गई है? क्यों? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उपमा में किसी वस्तु के गुण को किसी परिचित वस्तु से तुलना करके स्पष्ट किया जाता है।
- काव्यांश में रंग की समानता सवेरे और खरगोश की आँखों को जोड़ती है।

चरण 1: तुलना का विषय खरगोश की आँखों से सवेरे की लालिमा की तुलना की गई है। कवि ने लिखा है कि सवेरा खरगोश की आँखों जैसा लाल है। यहाँ खरगोश की आँखें उपमान हैं और लाल सवेरा उपमेय है। इस तुलना से सुबह के आकाश का लाल रंग पाठक के सामने सजीव हो उठता है। यह एक स्पष्ट दृश्य-बिंब है।

चरण 2: तुलना का आधार खरगोश की आँखों का लाल रंग और उगते हुए सूर्य के समय सवेरे की लालिमा एक जैसे प्रतीत होते हैं। इसी रंग-साम्य के कारण कवि ने यह तुलना की है। परिचित जीव की आँखों से सवेरे को जोड़ने पर प्रकृति का दृश्य आत्मीय और आकर्षक बन जाता है। यह बिंब नई सुबह की ताजगी को भी अनुभव कराने में सहायक है।

चरण 3: निष्कर्ष खरगोश की आँखों से लाल सवेरे की तुलना की गई है, क्योंकि दोनों में लाल रंग की समानता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में तुलना की दोनों वस्तुएँ लिखकर उनका साझा गुण लालिमा अवश्य स्पष्ट करें।

8(ख). काव्यांश के मानवीकरण को स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रकृति अथवा निर्जीव वस्तु को मनुष्य की क्रियाएँ और गुण देना मानवीकरण कहलाता है।
- काव्यांश में शरद ऋतु को सक्रिय मानव के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

चरण 1: मानवीकरण की पहचान कवि ने शरद ऋतु को ऐसा व्यक्ति बनाया है जो पुलों को पार करते हुए अपनी नई चमकीली साइकिल तेज चला रहा है। ऋतु स्वयं मनुष्य की तरह साइकिल नहीं चला सकती और न अपनी इच्छा से पुल पार करती है। ये मानवीय क्रियाएँ शरद को प्रदान की गई हैं, इसलिए यहाँ मानवीकरण अलंकार है।

चरण 2: काव्यात्मक प्रभाव शरद के आगमन को केवल मौसम के परिवर्तन के रूप में कहने के स्थान पर कवि उसे गतिशील और उत्साहपूर्ण दृश्य बना देता है। नई चमकीली साइकिल और उसकी तेज गति से ऋतु के आगमन की ताजगी तथा स्फूर्ति उभरती है। इस तरह प्रकृति सजीव पात्र की भाँति सामने आती है और पाठक शरद के आगमन को सहजता से अनुभव करता है।

चरण 3: निष्कर्ष शरद ऋतु का पुल पार करना और नई चमकीली साइकिल तेज चलाना मानवीय क्रियाएँ हैं; इन्हीं के आरोप से मानवीकरण हुआ है।

त्वरित सुझाव: मानवीकरण समझाते समय शरद का नाम और उसे दी गई मानवीय क्रियाएँ साथ लिखें।

8(ग). काव्यांश की भाषा की दो विशेषताएँ लिखिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्य की भाषा का विवेचन करते समय शब्दावली और अभिव्यक्ति की विशिष्टता देखी जाती है।
- बिंबात्मक भाषा दृश्य को सजीव बनाती है और आलंकारिक प्रयोग अर्थ में सौंदर्य जोड़ते हैं।

चरण 1: सरल और सहज शब्दावली काव्यांश की भाषा सरल, सहज और बोलचाल की खड़ी बोली है। सवेरा, खरगोश, आँखें, पुल और साइकिल जैसे परिचित शब्दों से भाव स्पष्ट हो जाता है। कठिन या अत्यधिक संस्कृतनिष्ठ शब्दों के स्थान पर दैनिक जीवन की वस्तुओं का प्रयोग किया गया है। इससे पाठक प्रकृति के वर्णन को अपने अनुभव से आसानी से जोड़ सकता है।

चरण 2: चित्रात्मक और आलंकारिक अभिव्यक्ति भाषा चित्रात्मक तथा आलंकारिक है। खरगोश की आँखों जैसा लाल सवेरा कहकर उपमा के माध्यम से सुबह का लाल रंग उभारा गया है। शरद को साइकिल चलाते दिखाकर मानवीकरण किया गया है। इन प्रयोगों से रंग और गति का सजीव दृश्य बनता है तथा ऋतु का आगमन ताजगी से भर उठता है। इस प्रकार भाषा केवल सूचना नहीं देती, दृश्य का अनुभव कराती है।

चरण 3: निष्कर्ष दो विशेषताएँ हैं : सरल, सहज बोलचाल की खड़ी बोली तथा उपमा और मानवीकरण से युक्त चित्रात्मक भाषा।

त्वरित सुझाव: भाषा की प्रत्येक विशेषता के साथ काव्यांश का एक शब्द या प्रयोग उदाहरण में जोड़ें।

9(क). 'आत्मपरिचय' कविता में कवि ने अपने जीवन में किन परस्पर विरोधी बातों का सामंजस्य बिठाने की बात की है? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- हरिवंश राय बच्चन की कविता में कवि का निजी प्रेम, मस्ती और संवेदनशीलता संसार की अपेक्षाओं के साथ उपस्थित हैं।
- विरोधी अनुभवों का सामंजस्य व्यक्तित्व की जटिलता और जीवन को स्वीकार करने की क्षमता प्रकट करता है।

चरण 1: संसार का भार और निजी प्रेम कवि संसार और जीवन की जिम्मेदारियों का भार उठाता है, फिर भी उसके हृदय में प्रेम जीवित है। संसार से उसका संबंध होते हुए भी वह उसकी रीति और बाहरी प्रतिष्ठा का अनुयायी नहीं बनता। वह अपने मन की स्वतंत्रता तथा प्रेम की अनुभूति को बनाए रखता है। इस प्रकार सामाजिक जीवन के दबाव और निजी भावलोक का साथ-साथ निर्वाह होता है।

चरण 2: विरह, वेदना और उल्लास का मेल कवि के भीतर दुख और विरह की आग है, किंतु उसकी अभिव्यक्ति शीतल वाणी और गीत के रूप में होती है। वह रोदन में भी राग लेकर आता है। उसके गीतों में पीड़ा छिपी है, फिर भी उनमें आनंद, मस्ती और जीवन के प्रति आकर्षण है। जलन और शीतलता तथा रोदन और गान का यही मेल उसकी अनुभूति को गहराई देता है।

चरण 3: व्यक्तिगत स्वतंत्रता और जगत से संबंध कवि को जगत की स्वीकृति की चिंता नहीं है, फिर भी उसके हृदय में जगत के प्रति संवेदना है। वह भौतिक वैभव के महलों को तोड़कर अपने कल्पनालोक में रहने की स्वतंत्रता चुनता है। संसार के नियमों से असहमति उसे प्रेमहीन नहीं बनाती। उसका आत्मपरिचय बताता है कि बाहरी संघर्षों और भीतरी कोमलता को एक साथ जीना संभव है।

चरण 4: निष्कर्ष कवि ने सांसारिक भार और प्रेम, जगत से संबंध और उससे स्वतंत्रता, विरह की ज्वाला और शीतल वाणी तथा रोदन और गीत के परस्पर विरोधी भावों का सामंजस्य अपने जीवन में बिठाया है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में प्रत्येक विरोधी भाव को उसके दूसरे पक्ष के साथ जोड़कर लिखें और कविता में उसके सहअस्तित्व का अर्थ स्पष्ट करें।

9(ख). 'कविता के बहाने' उसकी उड़ान और उसके खिलने का आशय स्पष्ट कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कुँवर नारायण ने कविता की सृजनात्मक शक्ति को चिड़िया की उड़ान और फूल के खिलने के माध्यम से समझाया है।
- प्राकृतिक क्रियाएँ सीमित होती हैं, जबकि कविता कल्पना, अर्थ और मानवीय अनुभव के कारण व्यापक तथा कालातीत हो सकती है।

चरण 1: कविता की उड़ान का आशय कविता की उड़ान कवि की कल्पना और संवेदना के असीम विस्तार का संकेत है। चिड़िया एक निश्चित स्थान और अपनी शारीरिक क्षमता की सीमा तक उड़ती है। कविता की उड़ान इन सीमाओं से आगे जाती है। वह घर के बाहर और भीतर, मन के संसार में तथा दूर स्थित लोगों के अनुभवों तक पहुँच सकती है। चिड़िया इस मानसिक और भावनात्मक विस्तार को नहीं जान सकती। इस तुलना से कविता की स्वतंत्र और व्यापक सृजनशक्ति स्पष्ट होती है।

चरण 2: कविता के खिलने का आशय कविता का खिलना उसके सौंदर्य, अर्थ और प्रभाव के विकसित होने का प्रतीक है। फूल किसी स्थान और ऋतु में खिलता है तथा समय के साथ मुरझा जाता है। कविता पाठकों के मन में नई अनुभूतियाँ जगाती है और अलग-अलग समय में नए अर्थ ग्रहण करती है। उसका सौंदर्य किसी एक फूल की आयु में बँधा नहीं है। वह मनुष्य के भीतर आनंद, आशा और संवेदना का विस्तार कर सकती है।

चरण 3: दोनों बिंबों का संयुक्त अर्थ उड़ान कविता की कल्पनाशील गति को और खिलना उसके निरंतर विकसित होते सौंदर्य को सामने लाता है। कवि प्रकृति को अभिव्यक्ति का आधार बनाता है, किंतु कविता की संभावना उससे अधिक व्यापक दिखाता है। कविता स्थान, समय और बाहरी आकार की सीमाओं को पार करके अनेक पाठकों के जीवन से जुड़ती है। यही उसकी सार्वभौम मानवीय शक्ति है।

चरण 4: निष्कर्ष कविता की उड़ान उसकी असीम कल्पना और अनुभूति का विस्तार है; उसका खिलना अक्षय सौंदर्य तथा निरंतर नए अर्थों का प्रस्फुटन है।

त्वरित सुझाव: उड़ान को कल्पना के विस्तार और खिलने को सौंदर्य तथा अर्थ के विकास से जोड़ें; चिड़िया और फूल की सीमाएँ भी स्पष्ट करें।

9(ग). 'बादल राग' के आधार पर लिखिए कि वज्र गर्जन से कौन त्रस्त होते हैं और क्यों? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बादलों का वज्र जैसा गर्जन कविता में क्रांति और परिवर्तन का संकेत है। उसका प्रभाव समाज के विभिन्न वर्गों पर अलग-अलग पड़ता है।
- कवि शोषक संपन्न वर्ग के भय को शोषित जन की आशा के विपरीत रखकर बादलों का सामाजिक अर्थ स्पष्ट करता है।

चरण 1: त्रस्त होने वाले वर्ग की पहचान वज्र गर्जन से धनवान, पूँजीपति और शोषक वर्ग त्रस्त होता है। कविता में आकाश को छूते भवनों में रहने वाले लोगों का उल्लेख है। वे अपनी समृद्धि और वैभव के बीच भी बादलों की गर्जना से काँपते हैं। उनके पास भौतिक सुख तो बहुत हैं, किंतु अन्याय पर टिकी संपत्ति उन्हें निर्भय नहीं बनाती। सुख-संपन्न भवन भी उन्हें परिवर्तन की संभावना से सुरक्षा का विश्वास नहीं दे पाते। उनका भय उनके भीतर छिपे असुरक्षाबोध को उजागर करता है।

चरण 2: उनके भय का कारण बादलों की गर्जना उन्हें ऐसी क्रांति का आभास देती है जो शोषण की व्यवस्था को बदल सकती है। उन्हें आशंका है कि पीड़ित जनता जाग उठेगी और उनका संचित वैभव तथा प्रभुत्व समाप्त हो जाएगा। इसके विपरीत छोटे पौधों की तरह साधारण जन परिवर्तन से प्रसन्न होते हैं। इस विरोध के कारण स्पष्ट होता है कि गर्जन से डरने का कारण केवल तेज आवाज नहीं, बल्कि अन्यायपूर्ण सत्ता और संपत्ति खोने का भय है।

चरण 3: निष्कर्ष वज्र गर्जन से शोषक धनिक वर्ग त्रस्त होता है, क्योंकि उसे क्रांति के फलस्वरूप अपनी अन्याय से अर्जित संपत्ति, सत्ता और विशेषाधिकार नष्ट होने का भय है।

त्वरित सुझाव: गर्जन को क्रांति से जोड़ें और धनिकों के भय की तुलना छोटे पौधों अर्थात साधारण जन के उत्साह से करें।

---

10. जौं जनतेउँ बन बंधु बिछोहू।
पिता बचन मनतेउँ नहिं ओहू।।
सुत बित नारि भवन परिवारा।
होहिं जाहिं जग बारहिं बारा।।
अस बिचारि जियँ जागहु ताता।
मिलइ न जगत सहोदर भ्राता।।
जथा पंख बिनु खग अति दीना।
मनि बिनु फनि करिबर कर हीना।।
अस मम जिवन बंधु बिनु तोही।
जौं जड़ दैव जिआवै मोही।। [8 अंक]

10(क). राम पिता का वचन नहीं मानें – क्या यह संभव था? फिर वे ऐसा क्यों कह रहे हैं? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पद्यांश में राम के कथन को लक्ष्मण-वियोग की आशंका और तत्कालीन शोक के संदर्भ में समझना आवश्यक है।
- शोक में व्यक्त भावावेग को पात्र के स्थायी कर्तव्यबोध से जोड़कर उसका आशय स्पष्ट किया जाता है।

चरण 1: पिता की आज्ञा के प्रति राम की निष्ठा राम का पिता का वचन न मानना उनके चरित्र के अनुरूप संभव नहीं था। वे पिता की आज्ञा को सर्वोपरि मानकर ही वन आए थे। उनका आचरण मर्यादा और कर्तव्यपालन पर आधारित है। इसलिए इस कथन को पिता के प्रति वास्तविक अवज्ञा का निर्णय नहीं माना जा सकता।

चरण 2: कथन का भावनात्मक कारण लक्ष्मण को मूर्च्छित देखकर राम उनके बिछुड़ने की आशंका से अत्यंत व्याकुल हैं। इसी असह्य

शोक में वे कहते हैं कि यदि वन में भाई का वियोग होने की बात पहले जानते तो पिता का वह वचन भी न मानते। यह भावावेग उनके गहरे भ्रातृप्रेम और असहायता को प्रकट करता है।

चरण 3: निष्कर्ष पिता की आज्ञा का उल्लंघन राम के मर्यादित चरित्र में संभव नहीं था; वे लक्ष्मण के संभावित वियोग से अभिभूत होकर शोकावेश में ऐसा कह रहे हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में राम के स्थायी कर्तव्यबोध और क्षणिक शोकावेश, दोनों को स्पष्ट करें।

10(ख). काव्यांश के आधार पर तुलसीदास के नारी विषयक विचार पर टिप्पणी कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- टिप्पणी का आधार पद्यांश की पंक्ति और उसका प्रसंग होना चाहिए।
- राम का भ्रातृवियोग का दुख इस अंश में संबंधों की तुलना का मुख्य कारण है।

चरण 1: नारी संबंधी कथन की पहचान इस अंश में नारी को पुत्र, धन, भवन और परिवार के साथ ऐसी वस्तुओं अथवा संबंधों में रखा गया है जो जीवन में बार-बार प्राप्त हो सकते हैं। इस तुलना में पत्नी की अपेक्षा सहोदर भाई की दुर्लभता और महत्ता को अधिक बल मिला है।

चरण 2: विचार पर टिप्पणी यह कथन स्त्री के स्वतंत्र व्यक्तित्व के बजाय पुरुष के पारिवारिक संबंध के रूप में उसका मूल्यांकन करता है। इसमें तत्कालीन पुरुषप्रधान सामाजिक दृष्टि की झलक मिलती है। साथ ही, यह राम के अत्यंत शोकाकुल कथन का प्रसंग है; इसका तत्काल उद्देश्य भाई की अपूरणीयता बताना है। अतः टिप्पणी इसी अंश तक सीमित रखनी चाहिए और इससे कवि के समस्त नारी-विचारों का एकांगी निष्कर्ष नहीं निकालना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष पद्यांश में पत्नी को पुनः प्राप्त हो सकने वाला संबंध मानकर सहोदर भाई से कम महत्त्व दिया गया है। इसमें पुरुषप्रधान दृष्टि दिखाई देती है और प्रसंग का मुख्य बल भ्रातृप्रेम की अपूरणीयता पर है।

त्वरित सुझाव: नारी-विषयक टिप्पणी को पुत्र, धन, नारी और सहोदर भाई की तुलना से प्रमाणित करें।

10(ग). पक्षी और हाथी का उदाहरण क्यों दिया गया है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उपमा किसी परिचित स्थिति के माध्यम से पात्र की आंतरिक दशा को मूर्त करती है।
- यहाँ पक्षी के पंख और हाथी की सूँड़ उनकी स्वाभाविक शक्ति तथा समर्थता के आधार हैं।

चरण 1: उदाहरणों का अर्थ पंखों के बिना पक्षी उड़ नहीं सकता और अत्यंत दीन हो जाता है। इसी प्रकार सूँड़ के बिना हाथी अपनी स्वाभाविक शक्ति और कार्यक्षमता खो देता है। पद्यांश का कर हीना हाथी अपनी सूँड़ से वंचित हाथी है। दोनों उदाहरण आवश्यक अंग के अभाव से उत्पन्न असहायता बताते हैं।

चरण 2: राम की दशा से संबंध राम कहते हैं कि यदि भाग्य उन्हें लक्ष्मण के बिना जीवित रखता है तो उनका जीवन भी ऐसा ही असहाय और अधूरा होगा। लक्ष्मण उनके अनन्य साथी और सहारे हैं। इन उपमाओं से भाई के बिना राम की दीनता तथा उनके गहरे प्रेम की तीव्रता प्रत्यक्ष होती है।

चरण 3: निष्कर्ष पक्षी और हाथी के उदाहरण लक्ष्मण के बिना राम की असहाय, शक्तिहीन और अपूर्ण स्थिति को स्पष्ट करने के लिए दिए गए हैं।

त्वरित सुझाव: प्रत्येक उदाहरण का अभाव पहले बताएं, फिर उसे लक्ष्मण के बिना राम की स्थिति से जोड़ें।

10(घ). आशय स्पष्ट कीजिए – 'मिलइ न जगत सहोदर भ्राता।' [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भावार्थ में पंक्ति का सरल अर्थ और प्रसंग के भीतर उसका भाव, दोनों स्पष्ट होते हैं।
- सहोदर का अर्थ एक ही माँ के गर्भ से उत्पन्न भाई है; यहाँ यह संबंध अनमोल आत्मीयता का प्रतीक है।

चरण 1: पंक्ति का सरल अर्थ मिलइ न जगत सहोदर भ्राता का आशय है कि संसार में अपना सहोदर भाई फिर से नहीं मिल सकता। अन्य सुख-साधन या संबंध किसी रूप में दोबारा मिल जाएँ, किंतु उसी भाई की जगह कोई दूसरा व्यक्ति नहीं ले सकता। यहाँ संबंध की अपूरणीयता पर बल है।

चरण 2: प्रसंग और निहित भाव लक्ष्मण के मूर्च्छित होने पर राम उनके वियोग की आशंका से व्यथित हैं। वे भाई को जीवन का ऐसा अनन्य सहारा मानते हैं जिसका विकल्प नहीं है। इसलिए वे लक्ष्मण को जागने के लिए पुकारते हैं। पंक्ति राम के गहरे भ्रातृस्नेह, व्याकुलता और लक्ष्मण के अद्वितीय महत्त्व को प्रकट करती है।

चरण 3: निष्कर्ष संसार में सहोदर भाई का स्थान कोई अन्य नहीं ले सकता; राम के लिए लक्ष्मण का स्नेह और साथ अपूरणीय है।

त्वरित सुझाव: सहोदर का अर्थ बताने के बाद लक्ष्मण के वियोग की आशंका और राम के भ्रातृप्रेम को अवश्य जोड़ें।

अथवा

10. जाने क्या रिश्ता है, जाने क्या नाता है
जितना भी उँड़ेलता हूँ भर-भर फिर आता है
दिल में क्या झरना है?
मीठे पानी का सोता है
भीतर वह, ऊपर तुम
मुसकाता चाँद ज्यों धरती पर रात-भर
मुझ पर त्यों तुम्हारा ही खिलता वह चेहरा है! [8 अंक]

10(क). किसके रिश्ते को कवि समझ नहीं पा रहा है और क्यों? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवि और प्रिय के संबंध का आशय पद्यांश के प्रेम तथा आत्मीयता के संकेतों से स्पष्ट होता है।
- किसी संबंध की गहराई को न समझ पाने का अर्थ उसके अभाव से नहीं, उसकी असीमता से है।

चरण 1: रिश्ते की पहचान कवि अपने और संबोधित प्रिय के बीच के आत्मीय संबंध को पूरी तरह समझ नहीं पा रहा है। प्रिय का प्रभाव उसके भीतर भी है और उसका चेहरा ऊपर छाए चाँद की तरह उसके व्यक्तित्व पर भी दिखाई देता है। इससे दोनों के बीच गहरे प्रेम और अपनत्व का बोध होता है।

चरण 2: उलझन का कारण कवि जितना अपने हृदय का स्नेह उँड़ेलता है, उतना ही वह फिर भर जाता है। वह इस अक्षय स्नेह के स्रोत और प्रिय के सर्वव्यापी प्रभाव को किसी निश्चित रिश्ते के नाम में बाँध नहीं पाता। इसीलिए वह विस्मय से पूछता है कि यह कैसा रिश्ता और नाता है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि अपने और प्रिय के गहरे आत्मीय रिश्ते को समझ नहीं पा रहा है, क्योंकि उसका प्रेम असीम है और बाँटने पर भी निरंतर नया होकर उमड़ता रहता है।

त्वरित सुझाव: रिश्ते की पहचान के साथ उसके रहस्य का कारण भी बताएँ और उँड़ेलने पर फिर भर आने का संकेत लें।

10(ख). कवि को क्यों लगता है कि दिल में कोई झरना है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- झरना और मीठे पानी का सोता हृदय के अक्षय स्नेह के प्रतीक हैं।
- प्रतीक की व्याख्या करते समय उसकी विशेषता को कवि की अनुभूति से जोड़ना चाहिए।

चरण 1: काव्यांश का संकेत कवि कहता है कि वह जितना हृदय का प्रेम उँड़ेलता है, उसका हृदय उतना ही फिर भर जाता है। प्रिय के प्रति उसकी आत्मीयता देने से घटती नहीं है। यह अनुभव कवि और प्रिय के गहरे तथा आत्मीय संबंध की पहचान भी कराता है। उसके भीतर स्नेह का प्रवाह लगातार बना रहता है और वह इस अनुभव पर स्वयं भी आश्चर्य करता है।

चरण 2: झरने से समानता झरने का पानी लगातार बहता रहता है और उसका स्रोत उसे फिर भरता रहता है। इसी प्रकार कवि के हृदय में प्रेम का स्रोत कभी सूखता नहीं है। मीठे पानी का सोता कहकर वह प्रेम की मधुरता, पवित्रता और जीवनदायी अनुभूति को व्यक्त करता है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि को दिल में झरना होने का अनुभव इसलिए होता है कि प्रिय के प्रति उसका मधुर प्रेम जितना बाहर बहता है, उतना ही भीतर फिर उमड़ आता है।

त्वरित सुझाव: झरने का अर्थ केवल आँसू न लिखें; भर-भर फिर आने को अक्षय प्रेम से जोड़ें।

10(ग). 'भीतर वह, ऊपर तुम' – 'वह' और 'तुम' कौन हैं? स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सर्वनामों का अर्थ उनके निकटवर्ती पदों और पूरे काव्यांश के भाव से निर्धारित होता है।
- कवि के भीतर के प्रेम और उसके ऊपर छाए प्रिय के प्रभाव को अलग पहचानना आवश्यक है।

चरण 1: वह का संदर्भ 'वह' से आशय कवि के हृदय के भीतर स्थित मीठे पानी के सोते अर्थात प्रेम के अक्षय स्रोत से है। यही स्रोत बार-बार स्नेह से भर जाता है। इसलिए भीतर स्थित वस्तु कोई बाहरी झरना नहीं, कवि की भावमय आत्मीयता और उसके निरंतर उमड़ते प्रेम का प्रतीक है।

चरण 2: तुम का संदर्भ 'तुम' उस प्रिय आत्मीय व्यक्ति को संबोधित करता है जिसके प्रति कवि का यह प्रेम है। प्रिय का मुसकराता चेहरा कवि पर उसी प्रकार छाया रहता है जैसे धरती के ऊपर चाँद। भीतर बहता स्नेह और ऊपर छाया प्रिय, दोनों मिलकर कवि के जीवन में प्रेम की व्यापक उपस्थिति बताते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष 'वह' हृदय में स्थित प्रेम के मीठे सोते का संकेत है और 'तुम' कवि के प्रिय का, जिसका मुसकराता चेहरा उसके जीवन पर छाया रहता है।

त्वरित सुझाव: पहले वह को मीठे सोते से जोड़ें, फिर तुम को संबोधित प्रिय से; दोनों का स्थान भी स्पष्ट करें।

10(घ). मुसकराते चाँद वाली कल्पना को स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उपमा में दो स्थितियों के समान गुण को पहचानकर काव्य-कल्पना का आशय स्पष्ट किया जाता है।
- इस काव्यांश में चाँद और प्रिय के चेहरे के बीच कोमलता, प्रसन्नता तथा निरंतर साथ की समानता है।

चरण 1: चाँद की कल्पना कवि ने धरती पर रात-भर अपनी शीतल चाँदनी फैलाने वाले चाँद को मुसकराता हुआ माना है। चाँद का मुसकराना मानवीय भाव से जुड़ी कल्पना है। इससे धरती और चाँद के बीच निकटता तथा स्नेह का भाव प्रकट होता है और रात का वातावरण कोमल तथा सुखद बन जाता है।

चरण 2: प्रिय के चेहरे से संबंध जैसे चाँद रात-भर धरती के ऊपर रहकर उसे अपनी उजली, सुखद उपस्थिति से भर देता है, वैसे ही प्रिय का मुसकराता चेहरा कवि के जीवन पर छाया रहता है। प्रिय की स्मृति उसे आत्मीयता और आनंद देती है। यह तुलना प्रिय के निरंतर प्रभाव और प्रेम की मधुर अनुभूति को मूर्त करती है।

चरण 3: निष्कर्ष मुसकराते चाँद की कल्पना बताती है कि प्रिय का प्रसन्न चेहरा कवि पर उसी तरह निरंतर खिलता रहता है जैसे चाँद रात-भर धरती पर शीतल उजास बिखेरता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में चाँद और प्रिय के चेहरे की समानता बताएँ; केवल अलंकार का नाम लिखकर न रुकें।

---

11. जैसे मेरे नाम की विशालता मेरे लिए दुर्वह है, वैसे ही लक्ष्मी की समृद्धि भक्तिन के कपाल की कुंचित रेखाओं में नहीं बँध सकी। वैसे तो जीवन में प्रायः सभी को अपने-अपने नाम का विरोधाभास लेकर जीना पड़ता है; पर भक्तिन बहुत समझदार है, क्योंकि वह अपना समृद्धि सूचक नाम किसी को बताती नहीं। केवल जब नौकरी की खोज में आई थी, तब ईमानदारी का परिचय देने के लिए उसने शेष इतिवृत्त के साथ यह भी बता दिया; पर इस प्रार्थना के साथ कि मैं कभी नाम का उपयोग न करूँ। [8 अंक]

11(क). भक्तिन का समृद्धि सूचक नाम क्या था? वह उसे बताना क्यों नहीं चाहती? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- किसी व्यक्ति का नाम उसके वास्तविक जीवन की स्थिति का प्रमाण नहीं होता। नाम का अर्थ और जीवन का यथार्थ अलग होने पर विरोधाभास उत्पन्न होता है।
- प्रस्तुत गद्यांश में भक्तिन के समृद्धिसूचक नाम की तुलना उसके अभावपूर्ण जीवन से की गई है। उत्तर का आधार इसी तुलना और नाम छिपाने की उसकी इच्छा को बनाना चाहिए।

चरण 1: समृद्धिसूचक नाम पहचानिए भक्तिन का वास्तविक नाम लछमिन था, जो लक्ष्मी का लोकप्रचलित रूप है। लक्ष्मी धन, संपत्ति और समृद्धि की प्रतीक मानी जाती हैं। गद्यांश में लेखिका ने इसी अर्थ को स्पष्ट करने के लिए लक्ष्मी की समृद्धि का उल्लेख किया है। इसलिए भक्तिन का नाम अपने अर्थ में संपन्नता का सूचक था।

चरण 2: नाम न बताने का कारण समझिए नाम के विपरीत भक्तिन का जीवन गरीबी और अभाव में बीता था। उसके भाग्य में नाम के अर्थ के अनुरूप धन-समृद्धि नहीं आई थी। इस प्रकार नाम और वास्तविक परिस्थिति का विरोध उसे अखरता था, इसलिए वह किसी को अपना नाम बताना नहीं चाहती थी। नौकरी खोजते समय उसने ईमानदारी के कारण नाम बताया भी, तो लेखिका से उसका उपयोग न करने की प्रार्थना की।

चरण 3: निष्कर्ष भक्तिन का समृद्धिसूचक नाम लछमिन अर्थात लक्ष्मी था। अपने अभावपूर्ण जीवन और नाम के समृद्धिसूचक अर्थ में विरोध होने के कारण वह उसे बताना नहीं चाहती थी।

त्वरित सुझाव: उत्तर में लछमिन नाम लिखने के साथ उसका लक्ष्मी से संबंध और वास्तविक जीवन की निर्धनता अवश्य जोड़िए।

11(ख). 'मेरे नाम की विशालता मेरे लिए दुर्वह है' – कथन का आशय स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यह कथन महादेवी वर्मा का अपने नाम के अर्थ और अपनी वास्तविक सामर्थ्य के संबंध में विनम्र आत्मकथन है।
- कथन का आशय समझने के लिए विशालता को शारीरिक आकार और दुर्वह को किसी भौतिक बोझ के रूप में नहीं, बल्कि नाम से जुड़ी महानता की अपेक्षा के रूप में पढ़ना चाहिए।

चरण 1: महादेवी नाम का अर्थ स्पष्ट कीजिए लेखिका का नाम महादेवी है। इस नाम का अर्थ महान देवी है। इसके साथ महानता, दिव्यता और असाधारण गुणों का बोध जुड़ा है। अतः नाम की विशालता से लेखिका का अभिप्राय नाम में निहित इसी उच्च अर्थ और उससे उत्पन्न अपेक्षाओं से है।

चरण 2: दुर्वह होने का भाव समझिए लेखिका विनम्रतापूर्वक कहती हैं कि वे अपने नाम के इतने बड़े अर्थ के अनुरूप स्वयं को नहीं पातीं। महान देवी जैसे नाम की गरिमा और अपेक्षाओं को पूरी तरह निभाना उनके लिए कठिन है। इसलिए नाम की विशालता उन्हें उठाने में कठिन बोझ जैसी लगती है। इसी उदाहरण से वे आगे भक्तिन के समृद्धिसूचक नाम और उसके अभावपूर्ण जीवन के विरोध को सहज बनाती हैं। यह आत्मप्रशंसा का नहीं, विनम्रता का कथन है।

चरण 3: निष्कर्ष कथन का आशय है कि महादेवी नाम महान देवी जैसी गरिमा का सूचक है, किंतु लेखिका विनम्रतावश स्वयं को उस ऊँचे अर्थ के अनुरूप नहीं मानतीं; इसलिए नाम की महानता निभाना उन्हें कठिन लगता है।

त्वरित सुझाव: महादेवी के अर्थ से आरंभ करके नाम की गरिमा निभाने की कठिनाई बताइए; इसे लेखिका की विनम्रता से जोड़िए।

11(ग). 'नाम के विरोधाभासों' का आशय सोदाहरण समझाइए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- नाम का विरोधाभास वह स्थिति है जिसमें नाम से प्रकट अर्थ और व्यक्ति की वास्तविक दशा में मेल न हो।
- उत्तर में अंश से उदाहरण देकर नाम के अर्थ तथा जीवन की परिस्थिति का अंतर स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 1: विरोधाभास का अर्थ समझना किसी व्यक्ति का नाम सामान्यतः कोई शुभ गुण, ऊँची कल्पना अथवा मंगलकामना व्यक्त करता है। किंतु केवल नाम रख देने से जीवन में वे गुण अथवा परिस्थितियाँ नहीं आ जातीं। जब नाम एक स्थिति का बोध कराए और वास्तविक जीवन दूसरी स्थिति का, तो यही नाम का विरोधाभास है। यहाँ विरोध व्यक्ति के दो कथनों में नहीं, उसके नाम के अर्थ और उसकी जीवनगत सच्चाई में है।

चरण 2: गद्यांश से उदाहरण देना भक्तिन का वास्तविक नाम लक्ष्मी है। लक्ष्मी नाम धन और समृद्धि का बोध कराता है, जबकि भक्तिन के जीवन में अभाव है और उसे जीविका के लिए नौकरी खोजनी पड़ती है। इस प्रकार उसका समृद्धिसूचक नाम उसकी वास्तविक आर्थिक दशा के विपरीत है। इसी तरह लेखिका के नाम महादेवी में महान देवी होने की विशाल कल्पना निहित है, जिसे अपने साधारण मानवीय व्यक्तित्व के लिए वे दुर्वह बताती हैं।

चरण 3: निष्कर्ष नाम के अर्थ और व्यक्ति के वास्तविक जीवन में असंगति ही नाम का विरोधाभास है। लक्ष्मी नाम वाली भक्तिन का अभावग्रस्त होना इसका स्पष्ट उदाहरण है।

त्वरित सुझाव: पहले नाम का अर्थ लिखिए, फिर उससे विपरीत जीवन की वास्तविक दशा बताकर उदाहरण पूरा कीजिए।

11(घ). आशय स्पष्ट कीजिए – 'भक्तिन की समृद्धि कपाल की कुंचित रेखाओं में नहीं बँध सकी।' [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कपाल की रेखाएँ यहाँ भाग्य अथवा जीवन में मिली परिस्थितियों का संकेत करती हैं।
- अंश में लक्ष्मी नाम की समृद्धिसूचक अर्थछवि और भक्तिन के वास्तविक अभाव का विरोध उभारा गया है।

चरण 1: कथन का सांकेतिक अर्थ खोलना कपाल अर्थात माथे की कुंचित रेखाएँ यहाँ भक्तिन के भाग्य की ओर संकेत करती हैं। समृद्धि का संबंध उसके वास्तविक नाम लक्ष्मी से है, क्योंकि लक्ष्मी धन और ऐश्वर्य का प्रतीक मानी जाती हैं। लेखिका इस कथन से यह नहीं कहतीं कि भक्तिन पहले धनवान थी और उसका धन खो गया; आशय यह है कि नाम में निहित समृद्धि उसे जीवन में प्राप्त नहीं हुई।

चरण 2: नाम और जीवन के अंतर को स्पष्ट करना भक्तिन का नाम तो लक्ष्मी है, पर उसका जीवन धन-संपन्नता और सुख-सुविधाओं से युक्त नहीं है। वह आर्थिक अभाव से जूझती है तथा आजीविका के लिए लेखिका के पास नौकरी खोजने आती है। इसलिए लक्ष्मी नाम की समृद्धि उसके भाग्य में नहीं बँध सकी। अपने नाम और वास्तविक दशा के इसी विरोध के कारण वह अपना नाम बताना नहीं चाहती और लेखिका से भी उसका उपयोग न करने की प्रार्थना करती है।

चरण 3: निष्कर्ष कथन का आशय है कि लक्ष्मी जैसे समृद्धिसूचक नाम के बावजूद भक्तिन को संपन्न जीवन नहीं मिला। उसके जीवन के अभाव उसके नाम के अर्थ को सार्थक नहीं होने देते।

त्वरित सुझाव: कपाल की रेखाओं को भाग्य और समृद्धि को लक्ष्मी नाम के अर्थ से जोड़कर आशय लिखिए।

अथवा

11. अथवा — बाज़ार को सार्थकता भी वही मनुष्य देता है जो जानता है कि वह क्या चाहता है। और जो नहीं जानते कि वे क्या चाहते हैं, अपनी 'पर्चेज़िंग पावर' के गर्व में अपने पैसे से केवल एक विनाशक शक्ति – शैतानी शक्ति, व्यंग्य की शक्ति ही बाज़ार को देते हैं। न तो वे बाज़ार से लाभ उठा सकते हैं, न उस बाज़ार को सच्चा लाभ दे सकते हैं। वे लोग बाज़ार का बाज़ारूपन बढ़ाते हैं। [8 अंक]

11(क). बाज़ार को सार्थकता कौन देता है? कैसे? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बाज़ार की उपयोगिता वास्तविक आवश्यकता की पूर्ति से निर्धारित होती है।
- विवेकपूर्ण खरीद में इच्छाओं की स्पष्टता और आवश्यकता की पहचान प्रमुख हैं।

चरण 1: सार्थकता देने वाला व्यक्ति बाज़ार को वही मनुष्य सार्थकता देता है जो स्पष्ट रूप से जानता है कि उसे क्या चाहिए। ऐसा व्यक्ति अपनी वास्तविक आवश्यकताओं को पहचानता है। वह केवल धन होने के कारण या वस्तुओं के आकर्षण से प्रभावित होकर अनावश्यक खरीदारी नहीं करता और अपनी जरूरत पर ध्यान बनाए रखता है।

चरण 2: सार्थक बनाने की प्रक्रिया वह अपनी आवश्यकता के अनुसार वस्तु खरीदकर बाज़ार से वास्तविक लाभ लेता है। उसके विवेकपूर्ण व्यवहार से बाज़ार भी जरूरत पूरी करने वाली व्यवस्था बनता है। इस प्रकार ग्राहक और बाज़ार के बीच उपयोगी संबंध बनता है तथा धन के प्रदर्शन और निरर्थक खरीद को प्रोत्साहन नहीं मिलता।

चरण 3: निष्कर्ष अपनी आवश्यकता जानने वाला विवेकशील व्यक्ति आवश्यक वस्तुएँ खरीदकर बाज़ार को सार्थक बनाता है; इससे ग्राहक और बाज़ार दोनों को सच्चा लाभ मिलता है।

त्वरित सुझाव: कौन के उत्तर में जरूरत जानने वाला व्यक्ति और कैसे में जरूरत के अनुसार खरीदना अवश्य लिखें।

11(ख). खरीदने की शक्ति का घमंड बाज़ार को क्या प्रदान करता है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- क्रयशक्ति का अभिमान विवेकहीन उपभोग को बढ़ावा देता है।
- अंश में शैतानी शक्ति का अर्थ बाज़ार की विनाशकारी प्रवृत्ति से है।

चरण 1: घमंड का प्रभाव जो लोग अपनी आवश्यकता नहीं पहचानते, वे पैसे के बल पर खरीदने की क्षमता का प्रदर्शन करने लगते हैं। उनका उद्देश्य जरूरी वस्तु पाना नहीं रह जाता। अपनी पर्चेज़िंग पावर के गर्व में वे बाजार की चकाचौंध और लुभावने आकर्षण को अधिक प्रभावशाली बना देते हैं।

चरण 2: बाज़ार को मिलने वाली शक्ति ऐसे लोग अपने धन से बाज़ार को विनाशक, शैतानी और व्यंग्य की शक्ति प्रदान करते हैं। इससे खरीद-बिक्री आवश्यकता पूरी करने के बजाय दिखावे तथा निरर्थक उपभोग का साधन बन जाती है। न उन्हें वास्तविक लाभ मिलता है, न वे बाज़ार को सच्चा लाभ दे पाते हैं; उसका बाज़ारूपन ही बढ़ता है।

चरण 3: निष्कर्ष खरीदने की शक्ति का घमंड बाज़ार को विनाशक, शैतानी तथा व्यंग्य की शक्ति देता है और उसके दिखावे तथा अनावश्यक उपभोग को बढ़ाता है।

त्वरित सुझाव: अंश में प्रयुक्त तीनों शक्तियों का उल्लेख करके उन्हें जरूरत से कटी खरीदारी से जोड़ें।

11(ग). 'बाज़ार की सार्थकता' से क्या तात्पर्य है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सार्थकता का अर्थ किसी व्यवस्था का अपने वास्तविक उद्देश्य को पूरा करना है।
- बाज़ार का सच्चा लाभ आवश्यकता की पूर्ति से जुड़ा है, केवल अधिक खरीद से नहीं।

चरण 1: अभिव्यक्ति का अर्थ बाज़ार की सार्थकता का तात्पर्य है कि बाज़ार मनुष्य की वास्तविक जरूरतों को पूरा करने का उपयोगी माध्यम बने। आवश्यक वस्तुओं का उपलब्ध होना और उनका विवेकपूर्वक खरीदा जाना इस उद्देश्य को पूरा करता है। इस दृष्टि से बाज़ार का मूल्य केवल उसकी चमक-दमक या वस्तुओं की संख्या में नहीं है।

चरण 2: ग्राहक की भूमिका जब ग्राहक जानता है कि उसे क्या चाहिए, तब वह आवश्यक वस्तु लेकर अपने जीवन की जरूरत पूरी करता है और बाज़ार को भी सच्चा लाभ देता है। इसके विपरीत अनिश्चित इच्छाओं तथा धन के अभिमान से की गई खरीद उसके उपयोगी उद्देश्य को पीछे धकेल देती है और बाज़ारूपन को बढ़ाती है।

चरण 3: निष्कर्ष बाज़ार की सार्थकता से आशय वास्तविक आवश्यकताओं की विवेकपूर्ण पूर्ति और ग्राहक तथा बाज़ार के बीच उपयोगी लेन-देन की स्थापना है।

त्वरित सुझाव: सार्थकता की व्याख्या में आवश्यकताओं की पूर्ति बताएँ और उसे केवल व्यापार बढ़ने के समान न मानें।

11(घ). आशय स्पष्ट कीजिए – 'वे लोग बाज़ार का बाज़ारूपन बढ़ाते हैं।' [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आशय स्पष्ट करने के लिए कथन के संदर्भ, कारण और परिणाम को जोड़ना चाहिए।
- बाज़ारूपन अनावश्यक खरीद, दिखावे और धन के अहंकार से बढ़ने वाली प्रवृत्ति है।

चरण 1: वे लोग किनके लिए है यहाँ वे लोग ऐसे खरीदार हैं जो नहीं जानते कि वे वास्तव में क्या चाहते हैं। वे अपनी क्रयशक्ति के अभिमान में खरीदते हैं। जरूरत का स्पष्ट ज्ञान न होने से उनका व्यवहार बाज़ार की चमक-दमक और खरीदने की क्षमता के प्रदर्शन पर केंद्रित हो जाता है, वास्तविक उपयोगिता पर नहीं।

चरण 2: बाज़ारूपन बढ़ने का आशय ऐसे लोग अनावश्यक उपभोग और धन के दिखावे को प्रोत्साहित करते हैं। इससे बाज़ार मनुष्य की जरूरत पूरी करने के बजाय उसे अधिक से अधिक खरीदने के लिए लुभाने वाली शक्ति बन जाता है। ग्राहक भी सच्चा लाभ नहीं पाता और बाज़ार को भी सार्थक लाभ नहीं देता; उसकी विनाशकारी प्रवृत्ति बढ़ती है।

चरण 3: निष्कर्ष कथन का आशय है कि जरूरत पहचाने बिना धन के गर्व में खरीदने वाले लोग बाज़ार में दिखावे, प्रलोभन और निरर्थक उपभोग की प्रवृत्ति को बढ़ावा देते हैं।

त्वरित सुझाव: वे लोग का संदर्भ पहले खोलें, फिर उनके व्यवहार से बढ़ने वाले दिखावे और प्रलोभन को समझाएँ।

12(क). 'काले मेघा पानी दे' पाठ में लेखक और जीजी के विचारों में मूलभूत अंतर क्या है? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- लेखक का दृष्टिकोण तर्क और प्रत्यक्ष उपयोगिता पर आधारित है।
- जीजी का विश्वास लोकपरंपरा, आस्था और त्याग की भावना में है।

चरण 1: लेखक का तर्कप्रधान दृष्टिकोण लेखक इंदर सेना पर पानी फेंकने को व्यर्थ समझता है। भयंकर गर्मी और सूखे में जब पीने के पानी की भी कमी हो, तब कठिन परिश्रम से जुटाए पानी को लड़कों पर उड़ेलना उसे अनुचित लगता है। वह इस विश्वास को स्वीकार नहीं करता कि ऐसा करने से वर्षा होगी। उसकी आपत्ति जल की कमी और पानी के सीधे उपयोग को लेकर है।

चरण 2: जीजी की आस्था और त्याग का भाव जीजी इंदर सेना को पानी देने की परंपरा में विश्वास रखती हैं। उनके अनुसार इंद्र को पानी का अर्घ्य देना वर्षा की प्रार्थना है। वे समझाती हैं कि जिस वस्तु की कमी हो, उसे दूसरों के लिए देना ही सच्चा त्याग है। किसान भी अच्छी फसल पाने की आशा में अपने पास का बीज खेत में डालता है; इसी तरह थोड़ा पानी देना व्यापक कल्याण की कामना से जुड़ा है।

चरण 3: मूलभूत अंतर स्पष्ट करना इस प्रकार लेखक तत्काल दिखाई देने वाले लाभ और तर्क के आधार पर निर्णय करता है, जबकि जीजी लोकविश्वास तथा उदारता के आधार पर। लेखक को इस कर्म में पानी की बरबादी दिखती है; जीजी को इसमें सामूहिक मंगल, दान और आस्था का मूल्य दिखाई देता है। पाठ में दोनों दृष्टियों के बीच संवाद है।

चरण 4: निष्कर्ष लेखक की सोच तर्कशील और उपयोगितावादी है, जबकि जीजी की सोच आस्थापरक तथा लोकपरंपरा और त्याग के मूल्य से जुड़ी है। यही दोनों के विचारों का मूलभूत अंतर है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पानी की बरबादी वाला लेखक का तर्क और कमी में दान करने वाला जीजी का तर्क आमने-सामने रखिए।

12(ख). "'पहलवान की ढोलक' कहानी गरीब, असहाय ग्रामीणों के मृत्यु-संघर्ष की कथा है।" कथन के पक्ष या विपक्ष में सोदाहरण तर्क दीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कहानी में महामारी से जूझते गरीब गाँव का यथार्थ चित्रण है।
- ढोलक की ध्वनि विपत्ति के बीच साहस और जीवन-संघर्ष की प्रतीक है।

चरण 1: कथन के पक्ष में ग्रामीण जीवन की स्थिति यह कथन उचित है। कहानी में हैजे और मलेरिया से पीड़ित गाँव का वर्णन है। भोजन,

चिकित्सा और साधनों के अभाव में गरीब ग्रामीण असहाय हैं। दिन में कराह और रुदन सुनाई पड़ते हैं तथा रात में मृत्यु का भय छाया रहता है। वे बीमारी के साथ भूख और निराशा से भी लड़ रहे हैं। उनके पास संकट से बाहर निकलने की पर्याप्त व्यवस्था नहीं है।

चरण 2: ढोलक से मिलता संघर्ष का संबल ऐसी भयावह रातों में लुट्टन पहलवान की ढोलक सुनाई देती है। उसकी ताल ग्रामीणों को यह अनुभव कराती है कि जीवन का संघर्ष अभी समाप्त नहीं हुआ है। ढोलक रोग का उपचार नहीं करती, लेकिन भय और निराशा से टूटते मन को साहस देती है। उसकी आवाज़ मृत्यु के सन्नाटे के बीच जीवट और प्रतिरोध की आवाज़ बन जाती है।

चरण 3: पहलवान के परिवार का उदाहरण लुट्टन के दोनों बेटे भी महामारी के शिकार हो जाते हैं। व्यक्तिगत शोक के बावजूद उसका ढोल बजाना जारी रखना संघर्ष की चरम स्थिति को प्रकट करता है। अंततः पहलवान की मृत्यु और ढोलक का मौन हो जाना असहाय ग्रामीण संसार की त्रासदी को और गहरा कर देता है। इस प्रकार कथा केवल कुश्ती या मनोरंजन का वर्णन नहीं, अभाव में जीवन बचाने की जद्दोजहद का मार्मिक चित्र है।

चरण 4: निष्कर्ष अतः कथन के पक्ष में कहा जा सकता है कि महामारी, गरीबी और साधनहीनता से जूझते ग्रामीणों का मृत्यु-संघर्ष कहानी का केंद्रीय यथार्थ है; लुट्टन की ढोलक इस संघर्ष को मानसिक शक्ति देती है।

त्वरित सुझाव: पक्ष में तर्क देते समय महामारीग्रस्त गाँव, ढोलक से मिलने वाले साहस और पहलवान के बेटों की मृत्यु के उदाहरण जोड़िए।

12(ग). 'नमक' कहानी की लोकप्रियता के तीन कारणों का उल्लेख कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कहानी विभाजन से बँटे लोगों की साझा स्मृतियों और मानवीय संबंधों को प्रस्तुत करती है।
- नमक भावनात्मक लगाव और सीमाओं से बड़ी आत्मीयता का प्रतीक है।

चरण 1: विभाजन की पीड़ा और जन्मभूमि से लगाव कहानी की लोकप्रियता का पहला कारण भारत-पाकिस्तान विभाजन की पीड़ा का आत्मीय चित्रण है। सिख बीबी पाकिस्तान में छूटे लाहौर को आज भी अपना वतन मानती हैं। वहाँ से नमक मँगाने की उनकी इच्छा बताती है कि राजनीतिक विभाजन लोगों की स्मृति, पहचान और जन्मभूमि के प्रेम को समाप्त नहीं कर सकता। यह अनुभव विस्थापन झेलने वाले अनेक लोगों की भावनाओं से जुड़ता है।

चरण 2: मानवीय संबंधों की प्रभावशीलता दूसरा कारण धर्म और राष्ट्रीयता की सीमाओं से ऊपर उठी मानवीय संवेदना है। सफ़िया बीबी की छोटी-सी इच्छा पूरी करने का दायित्व अपनाती है। सीमा पर नमक से जुड़ी बातचीत में अधिकारियों की अपनी पुरानी धरती और संबंधों की याद उभरती है। इससे स्पष्ट होता है कि अलग देशों के लोगों की भावनाएँ बहुत हद तक समान हैं। कहानी मनुष्य को राजनीतिक पहचान के पीछे भी देखने की प्रेरणा देती है।

चरण 3: सहज शिल्प और नमक का प्रतीक तीसरा कारण साधारण नमक के माध्यम से गहरी बात कहने का प्रभावशाली शिल्प है। नमक केवल खाने की वस्तु नहीं रहता; वह साझा स्वाद, याद, अपनापन और वतन के रिश्ते का प्रतीक बन जाता है। सहज संवादों और छोटी घटना के सहारे कहानी बड़ा मानवीय सत्य व्यक्त करती है। इसकी भावपूर्ण और स्वाभाविक प्रस्तुति पाठक को प्रभावित करती है।

चरण 4: निष्कर्ष विभाजन और वतन की स्मृति का मार्मिक चित्रण, धार्मिक-राष्ट्रीय सीमाओं से बड़ी मानवीय आत्मीयता तथा नमक के सशक्त प्रतीक के साथ सहज कथाशिल्प इस कहानी की लोकप्रियता के तीन प्रमुख कारण हैं।

त्वरित सुझाव: तीन कारण अलग रखिए और प्रत्येक के साथ सिख बीबी, सफ़िया या नमक के प्रतीक से जुड़ा ठोस प्रसंग दीजिए।

12(घ). लेखक ने शिरीष के बहाने मनुष्य की 'अधिकार लिप्सा' पर भी प्रहार किया है। सोदाहरण प्रतिपादित कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- हजारीप्रसाद द्विवेदी प्रकृति के उदाहरणों द्वारा मानव-स्वभाव की दुर्बलताओं पर व्यंग्य करते हैं। शिरीष के पुराने फल अधिकार-मोह के प्रतीक बनते हैं।
- अधिकार-लिप्सा का अर्थ पद या सत्ता को अपने पास बनाए रखने की ऐसी इच्छा है, जिसमें व्यक्ति समय और परिवर्तन की आवश्यकता को भी भूल जाता है।

चरण 1: शिरीष के पुराने फलों का उदाहरण शिरीष के फूल कोमल होते हैं, पर उसके फल कठोर होते हैं। नए फूल आ जाने पर भी पिछले वर्ष के सूखे फल पेड़ से लटके रहते हैं। वे खड़खड़ाते रहते हैं और अपनी जगह छोड़ना नहीं चाहते। जब नए फल उन्हें धक्का देते हैं, तभी वे नीचे गिरते हैं। लेखक इसी प्राकृतिक दृश्य को मानवीय प्रवृत्ति से जोड़ते हैं।

चरण 2: मनुष्य की पदासक्ति पर व्यंग्य पुराने फलों की तरह कुछ मनुष्य अपना समय बीत जाने पर भी अधिकार छोड़ना नहीं चाहते। वे नई पीढ़ी और नई परिस्थितियों को स्थान देने के बजाय अपने पद से चिपके रहते हैं। लेखक ऐसे व्यक्तियों को उन पुराने नेताओं से जोड़ते हैं जो बदलते समय को पहचान नहीं पाते और नए लोगों का मार्ग रोकते हैं। अंततः उन्हें भी हटाया जाता है। इस उदाहरण से स्पष्ट होता है कि सत्ता का मोह विवेक को ढक देता है और व्यक्ति स्वेच्छा से पीछे हटने की गरिमा खो देता है।

चरण 3: निष्कर्ष शिरीष के पुराने, खड़खड़ाते फलों के माध्यम से लेखक ने अधिकार से चिपके रहने की मानसिकता पर प्रहार किया है। उनका संकेत है कि परिवर्तन को स्वीकार कर नई पीढ़ी को अवसर देना चाहिए।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पुराने फल, नए फलों का धक्का और पद से चिपके मनुष्य के बीच संबंध अवश्य स्पष्ट कीजिए।

12(ङ). जातिप्रथा हमारे देश में बेरोजगारी और भुखमरी का कारण कैसे बनती रही है? डॉ. आंबेडकर के विचारों के आधार पर स्पष्ट कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- डॉ. आंबेडकर जाति-प्रथा को केवल श्रम-विभाजन नहीं, बल्कि श्रमिकों का वंशानुगत विभाजन मानते हैं। इसमें काम का निर्धारण व्यक्ति की योग्यता या रुचि से नहीं होता।
- स्वस्थ अर्थव्यवस्था में मनुष्य को बदलती परिस्थितियों के अनुसार पेशा चुनने और बदलने की स्वतंत्रता मिलनी चाहिए।

चरण 1: जन्म के आधार पर पेशा निर्धारित होना जाति-प्रथा व्यक्ति का व्यवसाय उसके जन्म के आधार पर तय कर देती है। इसमें उसकी व्यक्तिगत क्षमता, रुचि और प्रशिक्षण को महत्त्व नहीं मिलता। उसे वही काम करना पड़ता है जो उसकी जाति के लिए निर्धारित है। इससे काम के प्रति स्वाभाविक उत्साह घटता है और योग्य व्यक्ति भी अपनी क्षमता का पूरा उपयोग नहीं कर पाता। कुछ व्यवसायों को हीन मानने से उनसे जुड़े लोगों में अपने काम के प्रति अरुचि भी पैदा होती है।

चरण 2: पेशा बदलने पर रोक का परिणाम उद्योग और व्यवसाय की प्रक्रियाएँ लगातार बदलती हैं। इसलिए कभी किसी पेशे की आवश्यकता घट जाती है और कभी कोई काम समाप्त हो जाता है। ऐसी स्थिति में जीविका बचाने के लिए नया पेशा अपनाना आवश्यक होता है। पर जाति-प्रथा व्यक्ति को पैतृक पेशा छोड़कर दूसरा काम करने की स्वतंत्रता नहीं देती। काम उपलब्ध न रहने पर भी वह दूसरे व्यवसाय में नहीं जा पाता। फलस्वरूप उसे बेरोजगारी और भुखमरी का सामना करना पड़ता है। इस प्रकार सामाजिक बंधन आर्थिक संकट को और गंभीर बनाते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष आंबेडकर के अनुसार जन्म से पेशा बाँध देना और व्यवसाय बदलने की स्वतंत्रता रोकना जाति-प्रथा की प्रमुख कमियाँ हैं। यही कठोर व्यवस्था बदलती आर्थिक परिस्थितियों में बेरोजगारी और भुखमरी का कारण बनती रही है।

त्वरित सुझाव: जन्माधारित पेशा, बदलती आर्थिक जरूरत और पेशा बदलने पर रोक की कारण-परिणाम शृंखला लिखिए।

13. यशोधर पंत के जीवन से हमें किन जीवन मूल्यों की प्रेरणा मिलती है? समीक्षा कीजिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मनोहर श्याम जोशी की कहानी 'सिल्वर वैडिंग' में यशोधर पंत के माध्यम से परंपरागत जीवन-मूल्यों और आधुनिक पीढ़ी के बीच तनाव दिखाया गया है।
- चरित्र की समीक्षा में उसके अनुकरणीय गुणों के साथ उसकी सीमाओं को भी देखना चाहिए। ईमानदारी, सादगी और आत्मीयता तभी उपयोगी हैं जब वे संवाद और समय-बोध से जुड़ें।

चरण 1: सादगी और ईमानदार जीवन का आदर्श यशोधर पंत दिखावे और खर्चीली आधुनिक जीवन-शैली से प्रभावित नहीं होते। वे नौकरी करते हुए सादा और अनुशासित जीवन बिताते हैं। बेटे की अधिक आय और परिवार के बढ़ते भौतिक आकर्षण के बीच भी उनका अपना मूल्यबोध बना रहता है। इससे हमें आर्थिक सफलता को ही जीवन की सफलता न मानने तथा अपनी आवश्यकताओं को संयमित रखने की प्रेरणा मिलती है। जीवन में सुविधा उपयोगी है, पर मनुष्य की पहचान केवल वस्तुओं और वेतन से नहीं होनी चाहिए।

चरण 2: कृतज्ञता, अपनापन और सामाजिक दायित्व उनके व्यक्तित्व पर किशनदा का गहरा प्रभाव है। वे अपने पुराने सहायक और मार्गदर्शक के प्रति आदर बनाए रखते हैं। परिचितों और संबंधियों से जुड़े रहने तथा दूसरों के सुख-दुःख में भाग लेने को महत्त्व देते हैं। नई पीढ़ी को कई सामाजिक संबंध अनावश्यक लगते हैं, किंतु यशोधर बाबू उन्हें जीवन की आत्मीयता मानते हैं। इस व्यवहार से हमें उपकार न भूलने, बड़ों का सम्मान करने और निजी परिवार के बाहर भी सामाजिक संबंध निभाने की सीख मिलती है।

चरण 3: आत्मसम्मान के साथ संवेदनशीलता विवाह की वर्षगाँठ पर आयोजित आधुनिक ढंग के समारोह में वे सहज नहीं रह पाते। उनके लिए दांपत्य केवल उत्सव और प्रदर्शन की वस्तु नहीं है। फिर भी बेटे के दिए गाउन के प्रसंग में उनकी भीतरी भावनाएँ उभरती हैं। उन्हें वस्तु से अधिक आत्मीय देखभाल की अपेक्षा है। यह प्रसंग बताता है कि बुजुर्गों को महँगे उपहारों के साथ संतान का समय, स्नेह और साथ भी चाहिए। परिवार में संवेदनशीलता का अर्थ दूसरे की अनकही आवश्यकता को पहचानना है।

चरण 4: आलोचनात्मक समीक्षा यशोधर पंत की हर बात को आदर्श मान लेना उचित नहीं होगा। किशनदा के जीवन-ढंग को कसौटी बनाकर वर्तमान को परखने की उनकी आदत और नई परिस्थितियों के प्रति संदेह परिवार से दूरी बढ़ाते हैं। उनकी असहजता में पीढ़ियों के संवाद की कमी भी दिखाई देती है। अतः उनसे सादगी, नैतिकता और आत्मीयता अपनाते हुए यह भी सीखना चाहिए कि परंपराओं को विवेक से निभाएँ और नई पीढ़ी की बात सुनें। आदर्श जीवन के लिए मूल्यों की दृढ़ता के साथ व्यवहार में लचीलापन आवश्यक है।

चरण 5: निष्कर्ष यशोधर पंत का जीवन ईमानदारी, संयम, कृतज्ञता, सामाजिक आत्मीयता और मानवीय संबंधों की गरिमा की प्रेरणा देता है। उनकी सीमाएँ बताती हैं कि इन मूल्यों की रक्षा समयानुकूल दृष्टि और पारिवारिक संवाद के साथ करनी चाहिए।

त्वरित सुझाव: प्रत्येक जीवन-मूल्य को कहानी के किसी प्रसंग से जोड़िए और समीक्षा में उनकी परिवर्तन-विरोधी प्रवृत्ति की सीमा भी बताइए।

14(क). 'अतीत में दबे पाँव' के आधार पर सिंधु घाटी सभ्यता की प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- ओम थानवी का यात्रा-वृत्तांत 'अतीत में दबे पाँव' मोहनजोदड़ो के अवशेषों के माध्यम से सिंधु घाटी सभ्यता के नगर-जीवन, कला और सामाजिक संस्कृति का परिचय देता है।
- किसी सभ्यता की विशेषताएँ उसके भवनों के आकार से ही नहीं, सामान्य नागरिकों की सुविधाओं, सफाई की व्यवस्था और जीवन की कलात्मकता से भी पहचानी जाती हैं।

चरण 1: सुव्यवस्थित नगर और नागरिक सुविधाएँ सिंधु घाटी सभ्यता का प्रमुख गुण उसका विकसित नगर-नियोजन था। मोहनजोदड़ो की सीधी सड़कें, एक-दूसरे को काटती गलियाँ और योजनाबद्ध मकान इसके प्रमाण हैं। पकी ईंटों से बने घरों में स्नानघर, जल-निकासी और आँगन जैसी सुविधाएँ थीं। ढकी हुई नालियाँ स्वच्छता के प्रति सजगता दर्शाती हैं। कुओं और सार्वजनिक स्नानागार की व्यवस्था

बताती है कि पानी और सफाई को सामुदायिक जीवन में महत्त्व दिया जाता था। विशाल स्नानागार का निर्माण उनकी तकनीकी कुशलता और सार्वजनिक व्यवस्था का साक्ष्य है।

चरण 2: सुसंस्कृत जीवन, कला और सामाजिक दृष्टि यहाँ के लोग कृषि, व्यापार और अनेक शिल्पों से परिचित थे। मुहरें, मूर्तियाँ, मिट्टी के बरतन, आभूषण और अन्य वस्तुएँ उनकी कलात्मक रुचि तथा हस्तकौशल का परिचय देती हैं। कांस्य की नर्तकी जैसी कलाकृति जीवन के सौंदर्य और मानवीय अभिव्यक्ति के प्रति उनकी संवेदनशीलता बताती है। नगर की व्यवस्था में सामान्य नागरिक की सुविधाओं को स्थान मिलना भी उल्लेखनीय है।

लेखक इस सभ्यता को भव्य राजमहलों और विराट धार्मिक स्मारकों के प्रदर्शन से अधिक साधारण जीवन की गरिमा से जोड़ते हैं। उपलब्ध अवशेषों में हथियारों का प्रभुत्व नहीं दिखाई देता; कला, उपयोगी वस्तुओं और नागरिक व्यवस्था की उपस्थिति अधिक ध्यान खींचती है। इससे अपेक्षाकृत शांतिप्रिय, सुरुचिसंपन्न और सामुदायिक सुविधाओं को महत्त्व देने वाली संस्कृति का चित्र उभरता है। लेखक इसे साधन-संपन्न होने पर भी भव्यता के आडंबर से दूर सभ्यता के रूप में देखते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष सिंधु घाटी सभ्यता की प्रमुख विशेषताएँ योजनाबद्ध नगर, उन्नत जल-निकासी, स्वच्छता, सार्वजनिक सुविधाएँ, विकसित शिल्प-कला और सामान्य नागरिक के जीवन की गरिमा हैं। उसके अवशेष उपयोगिता तथा सौंदर्य के संतुलन से बनी सुसंस्कृत जीवन-दृष्टि को प्रकट करते हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में नगर-नियोजन, नालियाँ, स्नानागार और कलाकृतियों के ठोस उदाहरण देकर उन्हें नागरिक संस्कृति तथा साधारण जीवन की गरिमा से जोड़िए।

14(ख). 'जूझ' कहानी के कथानायक के जीवन संघर्ष पर प्रकाश डालिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आनंद यादव की आत्मकथात्मक रचना 'जूझ' में कथानायक का संघर्ष शिक्षा प्राप्त करने, विपरीत पारिवारिक परिस्थितियों से उबरने और अपनी रचनात्मक क्षमता को विकसित करने का संघर्ष है।
- कथानायक की सफलता के पीछे कठिन श्रम, पढ़ाई के प्रति दृढ़ लगन तथा सहायक व्यक्तियों से मिली प्रेरणा है।

चरण 1: पढ़ाई के अधिकार के लिए पारिवारिक संघर्ष कथानायक आनंदा एक किसान परिवार का बालक है। उसे पढ़ने की तीव्र इच्छा है, पर उसके पिता उसे खेत के काम में लगाए रखना चाहते हैं। पिता की दृष्टि में पढ़ाई की अपेक्षा खेती के काम का अधिक महत्त्व है। इस कारण बालक की शिक्षा रुक जाती है और उसे कम उम्र में कठोर श्रम करना पड़ता है। वह समझता है कि निरक्षर रहकर उसके जीवन की कठिनाइयाँ समाप्त नहीं होंगी। इसलिए वह खेती में उलझे रहने के स्थान पर शिक्षा के द्वारा अपना भविष्य सँवारना चाहता है।

वह माँ के साथ दत्ता जी राव के पास जाकर अपनी समस्या रखता है। उनके हस्तक्षेप से पिता उसे स्कूल भेजने के लिए तैयार होते हैं, किंतु खेत के काम से मुक्ति नहीं देते। आनंदा पढ़ने के लिए इन कठोर शर्तों को भी स्वीकार कर लेता है। विद्यालय जाने से पहले और लौटने के बाद खेत में काम करना तथा साथ ही पढ़ाई करना उसके संघर्ष को और कठिन बना देता है।

चरण 2: विद्यालय में आगे बढ़ने और कवि बनने का संघर्ष लंबे अंतराल के बाद विद्यालय लौटने पर उसे संकोच और सहपाठियों के बीच अपनी स्थिति से उत्पन्न कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। फिर भी वह मेहनत और अध्ययन से अपना स्थान बनाता है। सहपाठी वसंत पाटील की पढ़ने की लगन उसे प्रेरित करती है। वह समय का उपयोग करना और मन लगाकर पढ़ना सीखता है।

सौंदलगेकर मास्टर द्वारा भावपूर्ण ढंग से कविता पढ़ाए जाने पर उसके भीतर कविता के प्रति रुचि जागती है। वह खेतों में काम करते हुए भी कविताएँ दोहराता और अपनी रचनाएँ गढ़ता है। पहले जो एकाकी श्रम उसे बोझ लगता था, वही कल्पना और कविता के कारण अर्थपूर्ण बनने लगता है। इस प्रकार उसका संघर्ष केवल विद्यालय में प्रवेश तक सीमित नहीं रहता; वह अपने भीतर के रचनाकार को पहचानने और व्यक्त करने का संघर्ष भी बन जाता है।

चरण 3: निष्कर्ष 'जूझ' का कथानायक गरीबी, पिता के विरोध, कठोर कृषि-श्रम और शैक्षिक बाधाओं के बीच शिक्षा तथा कविता के लिए निरंतर प्रयत्न करता है। उसका जीवन-संघर्ष दिखाता है कि दृढ़ इच्छा, परिश्रम और उचित प्रेरणा प्रतिकूल परिस्थितियों में भी व्यक्ति

के विकास का रास्ता खोल सकते हैं।

त्वरित सुझाव: आनंदा के संघर्ष को क्रम से लिखिए: पिता का विरोध, दत्ता जी राव की सहायता, खेती के साथ पढ़ाई और सौंदलगेकर मास्टर से मिली काव्य-प्रेरणा।